

होमियोपैथिक

मनसे

सरल गृह-चिकित्सा ।

बटवृषा पाल एण्ड को० ।

ट्रि पेट होमियोपैथिक हल

१२ न बनफ़िन्ड सेनसे

प्रकाशित ।

१९११ ।

कीमत ५ एक रुपया ।

होमियोपैथिक

मतम

सरल गृह-चिकित्सा ।

वटहण्ड पाल एण्ड को० ।

दि घेट होमियोपैथिक इन्ड

१२ न० दनफिन्ड सेन्ने

प्रकाशित ।

११११ ।

कीमत १/ एक रुपया ।

Calcutta

1911

NARAYAN PRESS

11, Market Street, Calcutta

भूमिका ।

देखने देखते देखनागरी भाषामें लहा तथा होमियोपैथिक यह चिकित्सा पुस्तक प्रबोध हुर है । यहा यह प्रश्न सामकना है तब धीर एक पुस्तकके प्रकाशित होनेकी क्या आशरत है ?

इसके उत्तरमें यह बतलाय है कि — ठीक इस धरणको सरस हिन्दी भाषामें यह चिकित्साके उपयोगी पद्य दूसरे नहीं हैं कहनेसे भी चतुश्चि न होगी । इस पुस्तक में हमने नवोनवती चिकित्सकोंके सिये प्रत्येक रोगके निदिष्ट औषधीक—सधराचर व्यवहृत क्रम वा शक्तिका उद्घष कर दिया है । यहस्य तथा मिश्रित स्रिया तत्र इस देख कर महजने चिकित्सा कर सकेंगी ।

घर घरमें होमियोपैथिकके प्रचार उद्देश्यसे ही हमने इस तरह कुलभ मूल्यमें ऐसा इहत् धीर यह पुस्तक प्रकाश किया । इस समय चिनक निये हमारा इतना यत्न है यह पुस्तक उन लोगोंके उपकारमें जानेसे अमादि कार्यक समर्थी ।

विजया दयमी } विनीत निवेदक
 २ कात्तिक १२११ फान । } बटकृष्ण पाल एण्ड को० ।

विषय ।	पृष्ठा ।
गणविज्ञानाचार	२ • २०१
त्रैलोक्यदर्श	२०१ २०४
गुप्तनी चमड़ा	२०४ २ • ८
ज्वर	२०८ २०९
मानस चक्रज्वर	२१ २१४
मर्होज्वर	२१४ २१०
सकिराम (मेमेरिया) ज्वर	} २१०-२१४
चौर सन्पकिराम ज्वर ।	
दन्तज्वर	२१४ २१९
दन्तोदम (दांत उठना)	२१९ २४०
दन्तहा (दांतकीटा)	२४०-२४०
दूध उठाना (माई दूध उठाना)	२१ २१७
दूध बसव या दूध ठिंलना	२१२ २१४
धनुस्तर	२१४ २१८
जाहमे बहारा	२१८ २२२
दाजी बसव (बसवबह)	२२२ २२४
दंड चणवना	२२४ २२६
दन्त : जलदन्त	२२६ २००
दन्तहा (दांत उठना) चौर दिविष उठाना	२०१ २०४
दन्तहा (दांत उठाना) चौर दिविष उठाना	२ • २ २८
दन्तहा (दांत उठाना) चौर दिविष उठाना	२८० २८१

विषय ।	पृष्ठा ।
प्रसवके बाद रक्तस्राव	२८१ २८२
फूल पडनेमें विनम्य	२८२ २८३
प्रसवके अन्तमें वा प्रसवकालमें आघेय	२८३ २८४
प्रसवान्तिक ऊदस्राव (लोकिया)	२८४ २८५
प्रसवके अन्तमें पेयाइ बन्द	२८५ २८६
प्रसवके बाद स्तन्यधर	२८७-२८८
अतिरिक्त स्तन्यधरण वा दूध ज्यादा जाना	२८८ २८९
प्रसवके बाद नया पैदा हुआ शिशुका पालन	२८९
शिशु भूमिष्ठ होकर न रोना	२८९
शिशुका नाभिच्छदन धान प्रथम भन मूख त्याग शिशुका आहार नटना और उपोपाया ।	} २९० २९१
श्रीहा रोग	
वधिरता	२९६ २९७
बमल रोग	२९८ ३००
वमन (सेचक) रोग	२९९ ३०४
वागी वा वाघी	३०५ ३०६
वात (तरुण)	३०६ ३ ७
वात (पुरातन)	३०७-३ ८
वात (कमरका)	३१० ३११
व्रण और फ्लोटक	३११ ३१४

घान और व्यायाम ।

आधि प्राणम करनेके बाद जितने दिन पर्यन्त आदह रक्खा (पुष्पन) न हो उतने दिन पर्यन्त छोडे नरम जलमे कुछ समय भिन्नाडे घान करना रक्खा होता है । घान करनेके पहले कुछ तेन मर्दन करना उचित । मैरीरिया खरमे इन सीम घानडे प्यक्तो नहीं ।

नख्खर हाथानि (घाशरोग) इन्दिच्छरोगमे व्यायाम वा सास्त्रेका पन्ना रक्खा नहीं । पर खीठ रक्खा रहनुमे यष्टत् प्रभृति दुपातन रोगादिमे प्रातः खान और सायंकालमे सास्त्र दादु मीदन करनेके सास्त्रे धमप करना सराव नहीं । शरीरमे जितने प्यक्त रमन्डे इरात न हो उतना पर्यटन करनेमे कुछ विगाह नहीं सेता ।

दरफ और झल ।

विदह (माह) जनपान करना रक्खा दह रात पर हो दह कालमे रहते है । विन्नु रोमीके परसा हमम बुम्मे नरम और ठहा जन देना चाहिये । जहां ठंडा जन ऐन्डे रोमीके शरीरमे नरम बमली हो वा धर्षि पाने म्मे रहा पर नरम जन देना चाहिये । व्याम नरम बमले बूत म्मे चमती हो जाती है ।

पाकागयक वृत्तजन म जल परम नदी ठहरे तब बरफ का टुकड़ा व जलक मग रन वाहिनी । रक्त पाय और प्रताप पर करनक शक्त बरफका शिगप प्रयोग करना चाहिये । मस्तिष्क रग रमक प्रतापम वा गिर प्रभति पालम प्रकत रबरक रन म भराके धिर पर रखना चाहिये । शुद्ध र नल र का बरफ रना नियम है ।

निद्रा ।

निद्रा न ना यम मव रागम न पच्छा है किन्तु घडो स्वाम का न पच्छा न नद्रा है जगाक पोषण वा र र रना उचित नर नना पो सना वा रागको निद्रा ममक लेना व हय ।

रोगीको रखने का घर ।

रोगीका घर खूब परिष्कार । साफ । और शिगप खटखटा होना चाहिये जिम घरम तापडा भी हवा चनाचल हाता रहे ऐसा घर प्रयोजनीय होता है ।

एक घुरम कितनेज रोगीयाको रखना उचित नहीं । और रोगीके शरीरम हवा का वेग न लगने पावे । पयसा वायु चलेस हार बन्द कर देवे भी हवाके बन्द होनेम हार छोड देना चाहिये ।

संक्रामक पौडामें क्या क्या करना चाहिये ।

संक्रामक रोगों का बख्त बला देना चाहिये । दुर्गन्ध निवारणके लिये घुने का पाठडर भी बुरा नहीं । घेनेस, काबलिक एन्डिड व्यवहार वा गन्धक दाह का धूमकरना होमियोप्याथिक औषध व्यवहारमें निषिद्ध घरमें चागुन वा कोयला रखनेसे विशेष उपकार होता है । रोग पाराम होनेसे घरके साफ करनेके वास्ते गन्धकादि दाह करा जाता है । घुनेका धूना भी खराब नहीं है ।

इला बसन्त आदि रोगोंमें जो जो प्रतिषेधक उपाय लिखे गये हैं उन सबके उपर विशेष दृष्टि रखना चाहिये ।

रोगोंके घरमें रोगोंकी सेवा करनेवालोंके विषय विशेष सादमी रहना पड़ता नहीं । सेवा करनेवाला किसी खासदृश्य वायु लगानेसे पहले घुना लगाने वायु धोना चाहिये ।

रोगोंका लक्षण भी परीक्षा ।

रोग निश्चय करनेके समय मनमें आश्चयन होने जैसे लक्षणों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये ।

तरुप बदवा मयन घात रोगमें १०३ डिग्री होनेसे बड़ा ही कुनघण है । शरीरका उन्नाप ८३ होनेसे बचनेका धामा नहीं रहता ।

नाडी परीचा ।

दुखका दक्षिण धी स्त्री जातिके बायें हाथके कसि क ऊपर (मधिरन्धने) धार धार तीन चहुनी रूपके नाडोके छडफनेका मातुस करना चाहिये । गलेमें वा उरुदेघमें भी नाडी परीचा की जाती है नाडी परीचा (निघने) क वधन रोगको बह देना चाहिये कि किसी तरफ ध्यान न देना चर्दात् चलय मन रहना चाहिये ।

चरम्याके अनुमार नाडीकी गतिका बैग लेन वा मद्द होता है ।

परम्या ।

प्रति मिन्टमें जितनीधर ।

जकडावमें १ वर्ष पर्यन्त	१२	से	१४०
१ वर्ष पर्यन्त	११०	से	१२०
६ " "	८०	से	१००
१० " "	८०	से	८०
१० " "	७२	से	७२
हृदयवस्था	६१	से	८०

प्रशामत्तिया ।

नियोग चरम्यामें चरम्याके अनुमार शासत्रिदा लेन वा मद्द भी होजाते है ।

वातज्वरमें अथ मधुमेह पान्दुरोग म्वरमें बोधित वष
जा जाता है ।

मन ।

साधारणत निरोग शरीरवाले मनुष्यके मन का वष
हरिद्रा वष खाया जाता है । पीला पी कादेके समान
वर्ष होनेसे पित्तकाभाग कम हो जाता है । सखी
दुग्ध पीनेवाले बहुतोंके ऐसा दस्त होता है । प्यादा
(खूब) इनटिया वर्षका मन होनेसे पित्तका भाग
अधिक समझना । मन का वर्ण गाक पत्तेके माखिड़
हरा होनेसे अथ दीप समझना चाहिये । चार्डियोकी
त्रिया ठीक न होनेसे मन सूके कठिन हो जाता है ।
चार्डियोकी उत्तेजनासे अथकी माखिड़ भेद न्यारा
न्यारा हो जाता है और मनमें आदा पित्त रहनेसे यस्त
की पेडा समझना चाहिये ।

दरद ।

शरीरके दानमें अदाधिक पीडाकी हृदि होय और
पाचेर (पाट लगी हुई) पीडा कम होजाती है ।
दरदमें किसी किसी अगह हठात् पीडा होके गीध
नाम हो आवे उसने चादुगूल समझना चाहिये । ठंठ,
अथ काय अत्रोप पादि कारणोंसे अस्थानमें पीडा
(दरद) होजाती है । वात रोग्यलेक अधियोंने

दरद हाथ । हाथ पर या पाठम दरदके साथ खर हानम वमन हाजाता है । टलिन हाथ सयशा दलिन स्कधम दरद हानम यक्तकी पाण समभनी चाहिये ।

शरुचि ।

परिपाककी विकृतता खर टवलता सी प्रदा दिक्करोमीम शरुचि उत्पन्न हातो है । पाय मव प्रकारक कठिन रागम शरुचि लम्बो हातो है किन्तु गभविस्थाकी या शरुचि हातो है उमका नहीं समभनी चाहिये । सय काम बहुमूत्र या अजोण रोगम खानेकी प्रहमि अस्वाभाविक भावमे हा उद्वि पाद हातो है ।

दृष्या । प्यास ।

अनेक खरक साथ या अजोण रागम दृष्याकी हृदि पाद हातो है । बहुमूत्र रागम यह एक विरिय लक्षण है । जनालइ । जलकी उदमता नाग वामे) रोगम प्यास हातम अल पानम विरिय रोग उत्पन्न होय । फलत बहुत तिम या बार बार तिममे शारीरिक जलके संगकी कमता सी रागके हृदिका लक्षण समभनी चाहिये ।

शिरकी पीडा वा माथका दरद ।

निरन्तर माथेम दरद होनेम अपाक आयु रोग प्रवृत्ति दुबलता समभनी चाहिये । दुबलता खर सी प्रवृत्ति रोगम शिरमे तोत्र दरद खडा हो हातो है ।

भीननका अपाक होनेसे गिरमें कम दारद भी प्ररोरमें वमि वमि होय ऐसा मालुम होय । म्यालेरिया दोषमें नियमित समयमें लनाटके एक पाषमें दरद हाता है । छमि या क्षरायू रोगमें भी गिरमें दरद हा जाता है ।

वमन (उलटी) ।

सहसा (गिरंतर) किमीसे वमन हुआ तब पाका घय भी पातडियोंको विहति विना परिमायका भोजन, मद्यपान प्रभृति कारणसे वमन हुआ है वा और किसी प्रकारमें हुआ यह अनुसन्धान पहले कर लेना चाहिये । खर होनेमें किमी प्रकारका कण्टु वा गुमडा फुसो निकले उचकी भी पहले देख लेना चाहिये । हैजा वा पथरो रोगमें भी वमन होता है ।

गाना प्रकारको विपाह पीवधके खानेसे भी वमि होजाती है । खीके गभावस्थामें भी वमन होता है । रक्तवमन राग होनेसे रक्तवणका वमन होह । पत्र रोध रोगमें मत्र वा विठाका वमन होता है । पित्त वमन होनेसे उमका स्वाद पच (खटा) भी तिह (तोषा) होता है । पत्रीय रोगमें भी पचस्वाद विगिष्ट वमन होता है । छमि रोगमें फेन फेन (भाय) युक्त वमन होय और वमनको रच्छा हरदम बनी रहे ।

चिकित्सा विषयक ज्ञान ।

संसारमें रहके सुखमें जीवन यात्रा निश्चय करना चाहे तब किसीन किसी प्रकारका ज्ञान रखनेकी आवश्यकता विषयमें किसी प्रकारका ज्ञान रखना उचित विधेयत चिकित्सा विषयक ज्ञान होनेसे अपना अपने परिवार वगैरा तथा साम्प्रदायिक सज्जन और देगके उपाय करके ही सामर्थ्य हो जाती है । हमलिये हमने सक्षेपतासे यहां पर अनेक विषयोंकी व्यवस्थाकी है ।

चिकित्सामें अधैर्य ।

देग घर बाडीमें किसी साम्प्रदायिक वगैरे कठिन पीडा उपस्थित हानमें धैर्य रखना उचित । चिकित्सा विषयमें अधैर्य होनेसे ही बड़ा खराब फल उत्पन्न हो जाता है । नवीन पीडा को पुरानी पीडाको उमझ बुझके हम विषयमें धैर्य धारण करना ही कर्तव्य । और सज्जन ही न चिकित्सा, औषध वा चिकित्सक (वैद्य) को परिचक्षण करना बहुतही मन्द (खराब) है चिकित्सा विषयका विचार को औषधका विचार करके भना मुरा भगवानके ऊपर निर्भर करना ही अच्छा होता है । कितनेक वैद्य वा औषधको, एक साथ पकड़ करके अच्छा नहीं । हमसे वैद्य रुकटम

रहनेसे उसी दौषध चिकित् (घोडे) रोगकी दवासे मात्र ही है । जैसे—किसी घरमें खादा कुहरानरुन प्रयोगसे एक बार कुछ चाराम हीके कुछ समयके बाद घंटमें भूष दरद बन्द माया दुपना खादि होजाता है । वेसे ही चम्परागने वा चर्म (बजामीर) रोगके रक्तशावसे किसी प्रकारकी मसमके लगानेसे एक बार बन्द करनेसे गताप्रकार रोग प्राप्त होजाते हैं । जिसमेंसे वा खपदी पागम—जैसे होमियोप्याथिक चिकित्सा है वेसी घोर चिकित्सापीने दुनभ । तब ठीक दौषध निवाचन करके उसी रूप चाराम करना बडी ही बुद्धिमानी घोर धैर्यताका प्रयोजन होता है ।

द्रव्यगुण ।

द्रव्य गुण ।

गृहस्थ श्री गिष्ठाधिगणके वाग्दे पथ्य विषयमें विगोप सहाय होना वाग्नक नीचे कितनेक आवश्यकीय द्रव्यांका गुण भक्षपतास मविधेगित (वर्धन) किया है ।

ईशु (इक्षु) ।

श्रीतल कफजनक गुण । क पुष्टिकर श्री मूत्र कारक । जहा कफ का नाश वा पत्रिणता है वहा पर इक्षु दना निषेध ।

अदूर ।

श्रीतल श्विकारक गुण बडक, मन मूत्र कारक एत्यादि । अतिमार रोगीको दना निषेध । यक्षत श्री पुगनी पीडास इतिकारक है ।

धाम्य (धाम) ।

वहा धाम श्रीतल श्री कषाय, धम्य पित्त बडक । डासा धाम मन्तरोधक श्री रक्त पित्त मन्तोपकारी ।

पहा घाम—गुहपाक मम मीनक पुष्टिमद । रसे
करके रहित घाम पुराने दहत को घोडामें यदि ज्वर
पो बस न होतों दिया जाता है ।

खानमत्त (खानपापडा) ।

हरिकर चम्प गुहपाक रसक पो वायु पित्त
नाशक । पुराने यन्तू पीडामें उपरामो है ।

कमनानीयू (नारगी) ।

गुहपाक कुन्जबोधि हरिकरक । कच्ची वा पडे
दुध नारङ्गो हितकारक नहीं है । ज्वर पो बस का
दोष रहनेमें निग्रह । खैर लागी, माघ पागुनमें भी
दिया जाता है ।

कागधीनीयू ।

उपशोथ मधुपाक पाण्डु रसिकरक, हरि
कारक मूत्रकारक । ज्वर दहने पादिमें हितकारक
है । पलित्वर रोगमें माउके गुद ला मङ्गोडे भेदके
मम देतेह विगेष हरिकर होता है ।

दिगुर ।

मीनक गुहपाक, रस पित्त दहने रोगमें
हितकारक । रिकरके रचना पात्र करणा चाहिये ।

गर्द (चील) ।

दूध, लजपाक अग्निपत्रक अतिमार ल्वर, खासी आदि रोगान् टानाति ह । परन्तु बामो खोल देना निषेध । खालका मण अतिमार रोगमें अच्छा खोलमें लो लाकण भा पंडीमजि (करडि) हे छहको निकाल देनी चाहिये ।

गुजर ।

रुचिकर गातल गुदपाक पुष्टिकारक रसपित्त अतः चण कमल उर काम गगमं निनकारक । उपर का टिनका ३ १-२ २३ । अतिमार दीघ रहनेमें हम ल १ व्याहार नया करत है ।

गादुग्ध (गायका दूध)

गधुर सिध्व रुचिकारक, वल कान्तिवदक, हृद रोग भी नानाप्रकारका विष दाघ नागक । बामो दुग्ध निषेध । मउ दीहन करे छे ५।६ घण्टा उत्तोष होनेसे यह दुग्ध रोगीको देना निषेध । अति मन्तपचता करनेके शिये दुग्ध की विगेष रचा करनी चाहिये ॥

जाम (जामुन फल) ।

जामुन पत्रके इपत् (थोडा) कषयण होनेसे यह इपत् पत्र कषाय, हृत्, समरोधक । अश्लीष रोगमें

देना निषेध । कबको यह विद्याम है कि कामन यह
 वचनकारक है किन्तु उसके कामेन और चर्मीचता
 होजाति है । कामन का धरक बहुत बच्चा परन्तु
 उपरका सीम यह करे बिना धाना चन्दन निषिह ।

गुलाब घामुन ।

गुरुपाक घामन इतिहर । पुराने पछत रोगमे
 पूर घहा हुआ गुलाब घामुन उपकार करता है ।

दाडिम (अनार) ।

मधुर, वा बेदाना लघु तिथि यन्कारक, यह
 मुपकी माफ करता है, वा बिनाय नामक है । प्रति
 कार रोगमे दित है । यह (एई) गुण्डुल दाडिम एक
 दोषवाने रोगको निषेध है ताभि उरुह वा इतिहर
 को इष्यारोय नामक है ।

पटोल (परवा) ।

सुदुपाक अमिउरुह रसक इतिहर, लर प्रभति
 रोगमे दितकर है । परवलका घता वा नाल पित्त
 नामक । परवल की बिन वा लड़ (मून) तीव्र विरेचक ।

पानीफन (कच्चा सिघाडा) ।

मीठक गुरुपाक, मलकडोषक, कडुलमक रसके
 पालेका (घून) गुण लघु पाक है ।

रिड (रिडिड) ।

निरु रानर, मारर आ रिड टाय नुट मारर ।
 पुवानर एर आ एरर रानमें रिडमारर ररा
 मारा है ।

मारे मरटा एमीरनीय रिडररर रर'की तालिका
 एरर रानर है इन की नी जा रररि रर मर, मर
 एररर रानर है ररररिड इन का एरर एरर रिडर
 मर है रररर रर एररररर ररररी ररर रीररा
 एरर रीरर मर मररर ।

सुवदा प्रयोजनीय रीरर समूहकी

तालिका ।

रीरर	मर	रीरर	मर
रान रिडररिडरर	१	ररररर	१
रानरिड	१ १०	ररररर	१
रररिड	१	ररररररर	१
ररररर		ररररररर	१ × १०
ररररर	१ १०	रररर	१
रररररर	१	ररररर	१ १०
ररर	१	ररररररर	११
रररररर	१ × १	ररररररर	१

दृष्टि (दृष्टि) ।

तिष्ठ गीतन कारक को पित्त दोष नष्ट कारक ।
पुरातन स्वर को यक्षत रोगमें हितकारक देखा
जाता है ।

नीचे सर्वदा प्रयोजनीय अतिनेत्र दृष्टि की तालिका
प्रदान की गई है इन की जो जो शक्ति वा लक्ष्य, सदा
स्वच्छ होना है इसीलिए इन का यहाँ उल्लेख किया
गया है । पाश्चिमी वा सुइसगण इसकी देखने की वधा
सदा देखने में सके ।

सर्वदा प्रयोजनीय द्रव्य समूह की

तालिका ।

द्रव्य	लक्ष्य	द्रव्य	लक्ष्य
परम मिटासिका	६	एस्ट्रिज्ज	६
पारमिनिड	६ १०	एस्ट्रिटार्ट	६
पारिक्वा	१	एस्ट्रिनाइट	६
पारिक्वा		एस्ट्रिज्ज	१ × १०
एस्ट्रिज्ज	६ १०	एस्ट्रिज्ज	६
एस्ट्रिज्ज	६	एस्ट्रिज्ज	१ १०
एस्ट्रिज्ज	६	एस्ट्रिज्ज	१ २
एस्ट्रिज्ज	१ × ६	एस्ट्रिज्ज	६

एति पाठ्यग्रह २४ औषधियोंका नाम
औ गति ।

औषध	गति वा क्रम	औषध	गति वा क्रम
१ आमोनिह	६	१३ चर्मटिका	६
२ पालिका	६	१४ क्षमकरम्	६
३ इण्डिका	६	१५ वेनेडोना	६
४ पञ्चोनाइट	६	१६ रिडिनम	६
५ खानोमिहा	१२	१७ ब्रायोनिदा	६
६ कुनाम	६	१८ भिरडाम	६
७ क्वाटरिस	६	१९ माऊमन	६
८ क्वाण्डे क्वे	१२	२० रमटकुम	६
९ क्वामिनि	१२	२१ क्वडर	१०
१० क्वामा	६	२२ माइरिडिया	१०
११ क्वेमिनिम	१५	२३ विना	१०
१२ क्वेमिनिहा	६	२४ विदार क्वडर	६

एति पाठ्यग्रह कितनीच बाहर प्रयोग

कामेष्टो औषध तालिका ।

एति क्वामिनि क्वामा क्वेमिनि क्वेमिनिहा
क्वेमिनिहा क्वेमिनिहा ।

दोगद्व शोधधियोंकी तालिका ।

शोधधियोंका नाम	नाइतिक नाम	दोगद्व शोध
शरम मिटानिकम	शरम	शेनाका शायना कुदम मार्कु ।
एशोनानाइटम नेपेसम्	एशोन	शरम सुरा कपुट शरम ।
एन्टिमोनियम कूडम्	एन्टिकूड	शेगार मार्कु एनम ।
एन्टिमोनियम टाटारिक (टाटार एमटिक)	} एन्टिटाटे	इपिका, पलम ककूनम् ।
शार्लनटम मेटालि कम		शार्लनट
शार्लनटम नाइट्रि कम्	शार्लनाइट	मार्कु नेटम ।
शरिशा मन्टेना	शरिका	इम्मेमिया इपिका क्याम्कर ।
शार्लनिकम्	शरम	शायना

लोहद्विदोका नाम	माहेतिष्ठ नाम	दोषद्विदोका ।
वायोद्विदम्	वादाड	वायु वामो वायुना एतिमदि ।
वाहरिम भासि	वाहरिम	नक्षत्रम् ।
कुपार		
यमिड वारडो	वारडोएडिड्	वधि वदाम्पर,
दियान्त्रि		एमोनिया ।
एडिड नाइडिडम	नाइडिडमिड	वदाम्परे, दियार,
		व्याम्पर ।
एनिडम क्रस्करिकम	एनपकिड	व्यानवे व्याम्पर
इचिउत्रा	इदुत्रा	उद्विदाथ ।
इपिकाहुदेना	इपिका	एमं वायुना
		नक्षत्रे दियेका
इमेदिदा	इमो	वधि एनम,
		वामो
		व्याम्पर ।
इउपटारियम		{ इउम इपि वाक माकमक
वारयोद्विदम्	इउपेटदाक	
इउप्रेमिया	इउप्रे	व्याम्पर एनम् ।
इदिउमेदिउिका	इपिम्	एमिउाक व्यावे दिन ।

दोहविधोऽत्र नाम	माहेतिह नाम	दोहद्वयौघह ।
कुम्भमैटिबिबम	कुम्भ	वेन चादना मय ।
दाकाहटिम्	दाउ	दास मय ।
वेनिडा निदम	बनिडो	क्याम्पर ।
चादना वरि	चादना	केरम चामं
मिन्नानिम्		दमम् मन्तर ।
बेनविमिन्म	बनम	कृति इदर ।
टेरिविन्म	टेरिविन्म	क्याम्पर, क्यान्धारिम ।
टिबिबिदम	टिबिबि	क्याम्पर इमे मिया ।
डिबिनेम	डिबट	महा चौविदम ।
कुम्भि	कुम्भ	क्याम्पार ।
हन्वेभारा	हन्वेभारा	क्याम्पार वरि काह ।
कुम्भ चरु	कुम्भ	क्याम्पार ।
नेम मित्रा टिबम	नेमि	क्याम्पार, चाम ।
नन्म निहा	नन्म	क्याम्पार कृत्रिया वेनाड ।
पडोकारनाम्	पडो	नन्म ।
दममैटिका	दमम्	क्याम्पो कृत्रिया मय इमे ।

शोषधियोंका नाम	साहसिक नाम	दाघघ्न शोषध ।
फस्फरम	फस्फ	क्याम्फार कफिया, मरुत
फेरम मेटालिकम	फरम	शायना, चास हिपार ।
व्यापटेमिया	व्यापट	क्याम्फार ।
व्याराइटा कावशिका	व्याराइटा	क्याम्फार ।
वैलेडाना	वेन	शोषियम् हिपार क्याम्फार, कफिया ।
ब्रायोनिया एलवम	ब्रायानि	रम रन्नेसि मरुत, क्याम्फार ।
मैरेडाम् एलवम्	मैरेडाम्	एकी क्याम्फार कफिया, शायना ।
मार्कुरियस मनुड्विष	मार्क मरु	वेन शायना हिपार चापि याम, शोषोह ।
मार्कु' विद्यमकरोसाइवम मार्कु'कर		हिपार शायोड, मारडिक्एमिड

दीपधियोका नाम	साहित्यिक नाम	दीपघ्न दीपध ।
रसटक्खिखो डेन्दुन्	राम	वेन व्राणी क्याम्फार ।
लाकेसिम	न्याडे	धाम वेत्त, फम ।
मारकोपडियम्	मारको	क्याम्फार ।
प्यावारना	ध्यावा	क्याम्फार ।
सिङ्गेन	सिङ्ग	क्याम्फार ।
सिक्किन्टा	सिक्कि	धविका टैवेक्कम्
सिना	सिना	इपिक्काक्क चायना हायम्, सायोमिया ।
सिङ्गेन कुल्टेम्	सिङ्गेन	क्याम्फार पनम इम्मे ।
सिपिया	सिपिया	एकीनाट्ट ।
मारसिमिया	मारसि	क्याम्फार डिपार
स्यधिया	स्यध	क्याम्फार ।
लाकेन्दम	दामो	दावेक्कम ।
मनकर	मन्डम्	दामो एत्तम् नक्क सिपिया क्याम्फार ।
दिपार मनकर	दिपार	वेत्त दामो ।
हायोमादेसम्	हायम्	क्याम्फार वेत्त ।

ख्यानिसाईकमिकाम ६ । पट्टी मन्त्रिकी
पीडा, पेटकी पीडाके साथ पञ्चायतीमता पारप
करनेसे ।

लिहाम ६ । मन्त्रियोंकी प्रवृत्ति म्योति पौ
रानोही मन्त्रियोंमें जनन मदिपानके पीछे पीडा
इत्यादि ।

जाडको पोडियम १ २ । पञ्चरो फोडवहता
यहतकी पीडा रात्रिम दरद की हृदि उदार (डकार) में ।

संक्षिप्त चिलित्सा वा सङ्केत ।

तरुण पीडा,—एकीन, प्रायो घटस्य । इमक
साय पाकायय का गोनयोगदानेसे—पण्डि—कूड ।

पुरातन पीडा,—नेदाम, मनवर, ज्ञान
हंरीय । दरद जानेसे—पणिका नञ्च पन्स ।

इसी पीडाके साथ पशावका क्रेश,—
प्रात्रारिष, वाष्पारिष ।

मतवालोंकी पीडा में,—श्यातरे, मञ्च
भमिशा पन्स ।

श्लेष्म त्र्यवस्था ।

नक्तमभमिका ६ । उत्प्रेषक द्रव्य सेवन गुह्य भीमन शो पयसिपाकजो पानुमद्विक्क पोडा । रात्रिडे यवम दरद शो यम्यणा बटती है ।

द्वायोनिया ६ । पोडाके द्वारा वक्षस्यतदेय (हृदयके उपर) पाक्रान्त ज्ञानस पैत्तिक मक्षण मिर माया वा कांधमे पीडा मानुम हाके पीडा को हृदि होय ।

रसटक्स ६ । पीडा का स्थान कडा गति होन शो दुस्वन्नता स्थिर रहनेमे पीडाको हृदि हातो है ।

सलफुर २० । पुरानो शो पुह्य परम्पराकी वात शरीरमें चुलकना शीर पोडा एकवार ही नाय होके फिर होजाती है ।

क्याल्केरोया २० । धातुगत पीडा मनमें पीडा रहनेमे कामक करनेसे पीडा अधियोंमें छट छट मन्द जाना पैर धाय घन्नात्र (पछीमसे) ठण्डा हो जाये ।

कल्चिकम ६ । अनेक सन्धि पाक्रान्त होके दरद नाय होके फिर हृदि पेयाव कम ज्यादा मोटे

पुनर्दोष देना चाहिये । वह मलपानेसे घरा घृत को गरम करके लगानेसे अन्दी घृष जाती है ।

श्रौषध-व्यवस्था ।

पल्-सेटोला । इसमें घीष वा राष पडनेसे पक्षी हो लगानेसे अन्दी घाराम होजाती है ।

थाफिसैयिया । दोनों पाषोके भाषणमें होनेसे गुमानपोके छपर लगानेसे शीघ्र घाराम होय ।

याफाडुटिस । धारधार नेवीकी भाषणमें होनेसे ।

मल्फर ३० । धारधार होनेसे दूर करनेके वास्ते एक सप्ताहमें दोवार ध्यङ्गार करना ।

हिपार सलफ ६ । तरष रोगमें लक्ष घल्लम दरद होनेसे घृष (घीष) पडवानेसे दिया जाता है ।

मार्कुमल ६ । दरद कम हो जानेसे इस शौषधको ध्यङ्गार करना चाहिये ।

सैशन विधि । तरष रोगमें प्रति दिनमें तीन बार पुराने रोगमें प्रातःकाल दो सायंकाल एक एक बार ध्यङ्गार करना ।

पुनः टीका देना चाहिये । यह मगानेसे बरा हन की
गम करके मगानेसे बन्दी हुए जाती है ।

धौषध-व्यवस्था ।

पल्मेटोना । इसमें पीप या रात्र पहनेसे
पहले ही मगानेसे बन्दी चाराम होजाती है ।

छाफिसेयिया । दोनों पाखंडे भाकदमें
हीनेसे गुमानपीक चपर मगानेसे भीत्र चाराम होय ।

याफाइटिस । शरदार नेत्रोकी भाकदमें
होनेसे ।

सल्फर ३० । शरदार होनेसे दूर करनेके
वास्ते एक मत्ताइमें दीवार व्यवहार करना ।

हिपार सल्फ ६ । तदर्थ रोमनें जहां चन्दन
दरद होनेसे पूय (पीप) पहचानेसे दिया जाता है ।

मार्कुसलु ६ । दरद कम हो जानेसे एक
धौषधकी व्यवहार करना चाहिये ।

सेवन विधि । तरफ रादनें प्रति दिनमें तीन
बार पुराने रोमनें मातःवाह्य की मातःवाह्य एक एक
बार व्यवहार करना ।

खाद्य पदार्थों को विनष्ट द्रव्यके रूप में दहन क्रियाके निबन्धसे यह ताप उत्पन्न होता है। परिपाक क्रियामें देहका रस पच होय और उसका स्वाभाविक उत्सर्ग को रसा हो जातो है। परिपाक क्रिया का व्यतिक्रम होनेसे जो पीडा उत्पन्न होय तिसको क्षीण वा क्षयाक रोग कहते हैं। हमने नीचे इसके नाना प्रकारके उत्पन्न सद्विधमित्त किये हैं, वह एक एक रोग योक्तके अर्थात् इतने हैं।

लक्षणा । भूयको विकृति, पेटपर साफरा, वा पेट पूर्ण मानुस वसन को इच्छा तिष्ठा वा खटा वसन तिष्ठा का नाक न होना वा खीम पर कांटेमें खड़े होना वा आदका विकार बुझने (हृदय) चलन वा दरद भोजन पर इच्छा न होना भोजनके करनेसे अत्यन्त क्षीण मानुस, होना, कभी कौठबहता, कभी अतिमार गिरनें दरद जाना मन को शरीरमें निम्नोन्न भाव हृदय का छड़कना इत्यादि।

भोजनके परिपाक की विकृतिके हेतुसे फुसफुस हृदय अस्मति नानाविध यन्त्रोंके हाथमें आघात (घोट) उत्पन्न होय।

अनुधा । कभी कभी भूयके न सगनेके बदले इच्छाही विकृत भूय उत्पन्न होय। हमो को यहतकी

एल्सा है । पाकागणमें विद्येयतासे उसकी दुग्ध
 पान्यासे जो मद्य भोजन मन्वुष्यदपम द्वाये विना या
 पान्यानिमित्त दूर विना उससे पन्थी तरह भोजन
 परिपाक नहीं होता है ।

मज्जिमा भ्वाडहोन एक एक पानकी १२ । १२
 द्वाय पत्रय करके निम्नना या । हम लोग दोर दोर
 कामोंमें तो हथा समय मट कर देते है किन्तु परमे
 शरकी पन्थापना (मज्जिमा पाडिक पध्ति) को
 भोजन करनेके समय द्वाही घमन रहते है । माकर्म वा
 मुषमें टाल भात रोटी देके पकित वा स्कुमर्म जाना !
 हमेमे हम मागेहा परिपान बडाही गोचनीय होता
 जाना है । हमको एनेक ममाह दुर्भर वा नाना
 कारणने कुछ भी करने नहीं गते यह एक बडाही दूर
 दृष्ट ।

कूपोदकानु । भोजन करने समय बोसना
 उचित नह । क्याना दोलनेमे हम मागेर भूपके
 मितरकी दूयित पध्ताम आयु वा काश्चिक एनिह
 पामके माये निमित्त होत्रति है ।

समय । भोजन वा समय, को परिमाण पडा
 रखना चाहिये । प्रतिदिन नियमित समयमें भोजन
 करनेका फल हमी हथा नहीं जाता । एकदिन
 मानकान भोजन किया, एरु दिन मध्याह्ने भोजन

सडे । किन्तु धनीर्ष भी पद्य प्रसूति रोगमें पच्छे
 मन्त्र्या (कर मन्त्रोज्ञा वाहा मागुर) भोन मच्छोके
 भानमें कथा देना क्व प्रसूति मानान्य तरकारी
 देना चाहिये, ममासा विष्पितासे मिरम्पु (राह)
 मात्र मिरव देना निषेध । एक दयत सागु वाली अत्र
 का मन्त्र पाराहट भी दुग्ध को घन्या करनी उचित ।
 दाह (तत्र) वा निम्पु का रस थोडा थोडा पुरा नही ।
 अत्र पानिके समय बीसका मुरम्पा पनार, पडूर
 मियो इत्यादि देना चाहिये । हतपत्र पदायमात्र
 मांस, पिटक (कचुरी वडा) मात्रा दध्य दव, गोधूम,
 माक रस, गुड दधि, हत हाना घोर, प्रसूति
 निषिद्ध है ।

पानीय (जल) । वा—कामि प्रसूति पान
 करना निषिद्ध । मय अन्नमें भोजनके समय ठण्डा जलही
 पच्छा, भोजनके समय अधिक जल पीना निषेध भोजन
 के पीछे ११३ घण्टा बाद जल पीना चाहिये । दिन
 भरमें २१३ म्वांस जल पीना पच्छा होता है । हमारे
 देशमें ज्वाल पत्रक जल पीना निषेध है ।

मनकी वृत्ति । प्रपुत्र पला-हरण भी प्रसव
 मन होनेसे भोजन करना उचित । हमारे देशमें
 भोजनके समय माता वा स्त्री वा घोर दाह पाकिय
 अन्न समीप बैठके भीशन कराते है । दाहव भेदने

मडे । किन्तु अजीर्ण भी एक प्रभृति रोगमें अच्छे
 सहायका (कद, मडरोन्ना वादा मागुर) भोजन, मच्छोके
 भोजनमें कच्चा केला, कष्ट प्रभृति सामान्य तरकारों
 लेना चाहिये, समान्य विषयतामें मिररु (राट)
 जान मिररु देना निषेध । एक बघत सागु वार्नी खर
 का मन्ड पाराट भी दुग्ध की व्यवस्था करना उचित ।
 हाक (तक) वा निम्बु का रस थोडा थोडा सुरा मर्हो ।
 जब खानेके समय बीमका सुरधा पत्तार, पहर
मिथी इत्यादि देना चाहिये । हतपक्क पदायमाक
 मास पिटक (कचूरी वडा) भाजा दूध यव, मोधम,
 गाऊ, इरु गुड दधि, हत खाना घोर, प्रभृति
 निषिद्ध ह ।

पानीय (जल) । पा—काफि प्रभृति पान
 करना निषिद्ध । कष्ट अथवा भोजनके समय ठण्डा जलही
 अच्छा भोजनके समय अधिक जल पीना निषेध भोजन
 के पोरके २३ घण्टा बाद जल खाना चाहिये । दिन
 भरमें २३ ग्लास जल पीना अच्छा होता है । हमारे
 देशमें ज्यादा गरम जल खाना निषेध ह ।

मनकी हृत्ति । प्रफुल्ल अस्त-करण भी प्रसन्न
 मन होनेसे भोजन करना उचित । हमारे देशमें
 भोजनके समय माता वा स्त्री वा घोर काट पानिय
 खान समीप बैठके भोजन कराते है । साहय सीमोंमें

भोजनके दोहे पाठ करना (पटना) निषेध । पवित्र रात्रिके आगप करना विहित नहीं है । वीच बेषमें खास्य रक्षा करनेके स्थान वा दवा परिवर्तन (बदलना) करना वा दूर द्रव्य गमनका परामर्श करना चाहिए ।

घनघान लीलीके यह परीत्य रोग सङ्ग्रमे ही ही होता है जोकि घनघान क्रमागत पक्षे पक्षे पदायं भोजन करके दिनमें निद्रा लेनेसे पशोम रात्रके हायने कर्म मुक्त (हटने) नहीं हो सक्ता । हरिद सोम भयानक परिश्रम करके पेटमें कुछ पण्डित तरह न पाके बाहरकी सीमाके शस्त्रे पीयाज मृत्तिके उत्तर निर्भर करनेसे खास्य (दुग्ध भीष) पण्डित नहीं रहना ।

श्रीधध व्यवस्था ।

एष्टि रूह २ । एति भोजन वा पाण्डस्यत्री पूर्ण होनेसे जो पीडा वासक सुोसंग ही हृदय की पीडा तिमके उपर सदा दुग्धकी माण्डिक सेव, दुग्ध सारा (हकार) कोष्ठरता और पेटका रोग पचाय कम पचाय बीजशाहने आगके पीके पीडाकी हृदि,

टेबल पर बैठके गन्धामादि के साथ भीजन साथ रखना होके करते हैं फलतः क्रोधदिके समोभूत होके भीजन करनेमें असोच हो जाता है ।

व्यायामादि (कमरत) । पूरा पूरा भीजन किये पीछे मानसिक वा शारीरिक परिश्रम करनेमें भीजन सोच नहीं होता इसलियेके दिग्गमें सब सो अतीव रागका इतना उत्पत्ति होकर है । तडातदि (अनदि) मुखमें भात रोटा न देनेसे मूत्र सो अद्विष्ट न करनेमें काम नहीं चलता ।

फलतः निश्चिन्ने हुए निशमी पर विरिष ध्यान रखना वा ५३ ।

प्रतिदिन प्रलय (मृदान्य समयमें) काममें गाढी-त्यान पृथक् अतिनावार वाहरकी भाष्य वायु सिकन करनके वास्तु ध्यान करना चाहिये । टडे लभमें ध्यान नियमित समय पर अच्छे अच्छे भीजनादि करके सोडिवार विश्राम करना चाहिये । दिनमें मित्रा सेना वसित है । भीजनके बाद २३ घण्टा पीछे जल पान करना, साध (वैशाल) में फल मूत्र भीजन मर्यादे सोडे पहने पैदल चलना यात्रि गाना प्रकार व्यायाम अथा (कमरत) तिसके पीछे मर्या निश्चिन्नेम चाहिये करके भीजन और भीजन दाय वा तीन घण्टा पीछे शयन करना चाहिये ।

भोजनके घोड़े पाठ करना (पटना) नियेष । अधिक राखिमें आगरण करना विहित नहीं है । बीच बीचमें स्वास्थ्य रचा करनेके स्नान वा हवा परिवर्तन (वदलना) करना वा दूर देग गमनका परामर्श करना चाहिये ।

घनधान लीगोंके यह घनीय रोग सदृशमें ही ही होता है क्योंकि घनधान क्रमागत अच्छे अच्छे पटाये भोजन करके दिनमें निद्रा लेनेसे घनीय रोगके ह्राससे कभी मुक्त (हुटने) नहीं हो सक्ता । दरिद्र लोग भयानक परिश्रम करके पेटमें कुछ अर्ध तरह न खाके पाहरकी भीभाके वास्ते पोशाक प्रभृतिके उपर निर्भर करनेसे स्वास्थ्य (सुख भोग) अच्छा नहीं रहता ।

श्रीधध व्यवस्था ।

एष्टि कूड १ । प्रति भोजन वा पाकस्थली पूर्व होनेसे जो पीडा, वास्तक सुोशोग जो हृदय की पीडा, निभके उपर सदा दुग्धकी माफिक सेप दुग्ध चहार (हकार) खोडवडना और पेटका रोग पदंयाय शम प्रशाय, पीडकासमें घानके पीडे पीडाकी हृदि,

भोजनके पोछे पाठ करना (पटना) नियेव । अधिक रात्रिमें जागरण करना विहित नहीं है । बीच बीचमें स्वास्थ्य रचा करनेके स्थान वा हवा परिवर्तन (बदलना) करना वा दूर दूर गमनका परामर्ग करना चाहिये ।

घनवान लोगोके यह पजीण रोग सङ्गमे ही मे हो जाता है क्योंकि घनवान क्रमागत अच्छे अच्छे पदार्थ भोजन करके दिनमें निद्रा मेनेमे पजीण रोगके हाथमे कभी मुक्त (हुटने) नहीं हो मक्ता । दृष्टि रोग भयानक परिश्रम करके पेटमें कुछ अच्छे तरह न खाके बाहरकी मोभाके वान्ने योगाक प्रभृतिके उपर निर्भर करनेसे स्वास्थ्य (सुख भोग) अच्छा नहीं रहता ।

श्रौधध व्यवस्था ।

एष्टि क्लृष्ट ६ । प्रति भोजन वा पाकस्थली पूर्ण होनेमे नो पीडा, वास्तक खुनोग नो हृदय की पीडा, जिभके उपर सदा दुग्धकी माफिक सेव, दुग्ध सदा, (डकार) कोष्ठवशता और पेटका रोग पथाय क्रम मक्ताय, शीघ्रकासमें घानके पीछे पीडाकी हृदि

शान्त हो मन्थित हो गये जानेसे पीड़ा उत्पन्न ही दिया जाता है ।

आमलिक ६ वा ३० वा । पत्नीवृत्तान्ते मायवत्त इत्यर्थे जनन मुखमें जन कडना, गलेमें जनन माल प्रोम परमें जनन विरमिषा वसन चरिषार, गरम जन पीनसे गान पर धानो ज्ञानो मालुम शय दृषयना कथं न ग नम लु या वीचज्ञानमें वरक दृष जनयान को पीडामें दिया जाता है ।

आयोनि ३ वा ३० । वीचज्ञानको गरममें धरन न । न जनक नरन जनने विमोक्षी श्या नरु कान न न जनमं ररकना उलतक नरु मेहन कथन को कथन । न । भीजनके पीठ मुखमें जनने मरि न ना वा उकार शरी वीचज्ञानो पर परको आकक भाव मालुम कोलकना मया दृषयना निज श्या विमने परिणयन भव इत्यादिमें दिया जाता है ।

क्याकक्रिया ३ वा ३० वा । पुरातन नरुदि गरम भाजन वा मरि शान्ति दृषया उल नरुदो दृषया कुधा जनना श्या उकार मरुदवना न कनिना मरुदो शय श्या शय वसन दिमि दान क रि शय दृषयनामें दिव जाना है ।

क्याकक्रिया ३ वा ३० वा । पुरातन शय शय

से पीछा योगी विचित्रवाद, चतुर्दशदिशे माघ पेट का
 वाली पत्र होना मदिना दण्डि लेनेके पाछे दवाग
 महा बुझा वा दवा उदार पय समन वा धामो
 उदार (उदार) होने। पायु निदन्तके का धाम रोगना
 दवा देनेवाली रोगना दवादाने रोग तिष्ठ पहर
 दिहा, समरमें दवा का न उदरण बुद्धि चालि ।
 रोगमें दिवा जाता ॥

आयुर्वेद ६ । दुग्ध दानग ३ दान वा दान ३

दिवा दुग्ध दानमें शयन शरभ अदरिषाक दो पट ५
 कावे दान मानुस ३ १२५ दान अदरिषाक दण्डि उदर
 हीन दानमद भोजन क्रिया दुग्ध दान निना परिषाद
 मन्त्रके माघ निजाना पट ५ मन्त्र दान
 दवा दानमन्त्रान्नी की मादक दान दानका दानका
 दानादिन दिवा जाता ॥

व्यालियाट्टे लमिकागु ६ । दानके माद

दवाके कामसे पेट दण्ड मदिना लेनेके पीछे विचार
 माघ भोजनमें दवाके कीमते उदर एनदिही मापिक
 सेप निज वा पटी प्रकार भोजन कासमें वा रसके
 पयवहित पीछे मानुस होय सेम परिषादके व्यापन
 हेतु भोजन दिवा दवा पदाद पटमें पडा है ।

लाइको पडियम १२ या ३० या । दुग्ध

काम या वा पदविन वासाद जिहासे हय वृद्ध
 मेद संभवे वा इत्यत्र एव रात्रिं शर शर यत्र
 एव कामस्य सः । तैसात्र वा हुमात्र वा मि
 दुष भोजनं दोषा एताव हीय भोजनं पीडे
 वसने वसनं समस्तता दारुषे वसराया यथा
 टोना हर दिय एत दुष संस वा रोटीया यदि
 नै एत नही हेन पामशा सम्यक काम्य पी
 जिहोर्के पीहा त्रिमही नम एदेवषी ठंवा वासा
 मं वसो पीहाने ।

सुत्पष्टर ३-शशा । सुगतन पीहा, दुफरी
 वाशमे हदशर म होनेसे स्कोटव एत कोहरना
 एत वाने, दुष राटी पी मिट दुष एत न होके एत
 नै दाह्यना एर मार मायूम जाना वासी पटकी
 वाशेन मायूम एत माया नम वाच देरीने वसन
 मयाने वासमिदं वस्य एत, वसन पेटकी
 वेना तिमै एवमसे एहद बैठ वनेसे पेटकी पीहाने
 दिय जाता है ।



मनुष्यगण को पीडा मोठा पदाय वा शाक यन्नि भोजन से पेट फुना अपरिपाक नियत निद्रासुता, पयश शरीरक शान्ति (हरारत) वानरहे, अपराङ्क ३ इनेसे ८ बजे पय्यन्त ममस्त नसण इदिमात होय, वार वमन कोटवपता थोडेसे हो पाहारसे पेट पूष मासुम होय यस्तकी इदि करनेवायो पेट को पुरानी पीडा, घायावक दुर्वनतामें ।

नक्तभमिका ६ वा ३० वा । जोभका पइला भाग साफ हो पयाडाग मेनापनयुक्त, भोजनके पीछे पेट पर पाफरा वेदना हो पूषता मासुम छातिमें जसन सही डकार दिवा, उदराधान बरवार भोजन किये हुये पदायका पित्त वमन मुखमें सदा वा तीखा स्वाद, भोजनके पीछे निद्रासुता किसी प्रकारके शरीरक वा मानभिक्ष परिश्रमसे कातरता, मल मूत्र त्याग का गिम्कन घिग जो अधिक पढ़नेसे वा अधिक खानेसे या सुरा (मदिरा) पान करके बैठनेसे वा घरमें रहनेसे, उन्नी पीडामें दुग्ध रोटी वा सदा सद्य नहीं होय इसके पीछे एनफर उपयोगी होता है ।

पन्सेटिला ६ । धीरे धीरे पीडा पदाय, अनेक दिनके भोजन किये हुये वा वमन वा रुउमें पाघ्वाद मासुम, छातिमें जसन, हो प्रात

काम या वा अर्धमिन् चास्तात् त्रिहात्रे उपर सुपेद
 मेघ, शोभने वा प्रथम उपर रात्रिमें बार बार कम्प
 को चामसय मे । तेनाह वा हनपह वा मिद
 दुग्ध भोजनसे पोहा लदव होय, भोजनके पोहे
 बनने हननेमें एमसदता दरदये कसरबा यपडा
 टोन्ग कर दिदा ज्ञाय दुग्ध मांस वा रोटीका चादि
 में सद्ग नहीं होना, घाहटा चमार, वातक पो
 खिचोको पोहा त्रिमथी गरम चदेवासे ठडा पाखा
 को चन्डी पोडामे ।

सुलफर इ० गवा । पुरातन पीडा दुबरी
 शीघ्रमे उपकार न होनेसे खोटक, धर्म खोहवता
 फल रोगे दुग्ध रोटी को मिष्ट द्रव्य सद्ग न होय फल
 में दाहकने दर भार मानूम होना घासी पेटका
 शान्तेन मानूम होय माथा गरम ज्ञाय देरीमें खलन
 मतथाने चान्मियाके चलीए रोग धमन पेटकी
 वेदना त्रिमी एकससे सहेद बैठ वानेसे पेटकी पीडामें
 दिया जाता है ।



टुंगुय उद्गारमें,—एन्स सक्कर, सिपिया ।

सडा उद्गारमें,—कार्बोमेत्रि ।

सुवपाक खादमें,—सिपिया ।

सन्नात खादमें,—चाहं प्रायो, कार्बोमेत्रि,

साहसोय नक्ष, एसस सनस ।

हृदयकी खलनमें,—स्यलडे, कार्बोमेत्रि

साहसोय नक्ष सक्कर इत्यादि ।

समनेष्टामें,—एन्टि टाट चाहं सिपिया नक्ष

सावेष्टाम इत्यादि ।

नुखमें बल पहनेमें,—प्रायो नक्ष सत

पर ।

भूख बन्दमें —पायना एसस एन्टिडूह

इत्यादि ।

घर्ष (Piles)

सञ्ज्ञा । मरुदारके मोतर की बाहिर गिरा
 म्भीत (फुटना) के सम हठिल चाडे छोटी छोटीबहि
 सत्य होता है । धुँद वा कल्लि'की देखनेके रहस्यं
 वा ह'पाम रहस्यं और सपशा पाहारमटर वा सड

यह छोड़ा होती है । गन्नाबन्ना को दहत की पीड़ा होनेसे इसको उत्पत्ति होने देपो जाती है ।

चिकित्सादि सहकारी उपाय । या

लाडि अधिक मसाना छजहार त्याग करना चाहिये । पिट्ट (बडा, कचीरी) भास भास (उडद) छछाडगुह भास निषेध है पुराना चावल धर मुट्टको दाब, परवल (पटोल) गुनरिया, मानकधु सोल लक्ष्मी मूर्ती कथो परण्ड का कडी प्रधति उपकारा । दुग्ध माधन घृतपक द्रव्य किमिम पद्म खडूर पको परण्डकाकडी मूठा (हाड) सुन्दर पण्य है । ठंडा जल परिमाण पुवक खन पान हर रोप शयन करनेके पहने मज त्याग (टही धाके) शयन करने का पन्थास करना अच्छा होता है ।

श्रौपध व्यवस्था ।

एकोनाइट ६ । रक्तधावके साथ वनिका कड़ापन गुच्छारमे गूल वैधवत् दरद प्वास, भूखका बन्ध होना निनाका न होना ।

दुम्कुलम ३ । जैसे गुच्छारके भीतर एक शीश वा टेक छूट गया है इस प्रकार माहुम होना । निषेधरके रोपमें दग् दग् करना समरसा वैहापनमें ।

घाटनेके माषिक मीढुम मदिरा वा पीनेके चम्पास
प्रकृति उपरोक्ते व्यवहार कराना चाहिये ।

सलफर ३० ग्र वा । मधुमन्त्रिका पुराना
रवाहोर, कभी पीडा नहीं रहती चर्मका शोचित
वन्ध होनेसे घेठने दरद इत्यम्बु प्रकृति माना रोग
उत्पन्न होना मधुमन्त्रिका सामने जो यह दोषध
घात-खान दोष बोधने व्यवहार करनेसे उपचार हृदि
होती है ।

सादुलिगिया १२ वा ३० ग्र वा । चर्ममें
ज्वर वेदना गुद्गार वा फुलकोदमें पीडा गुद्गार
की माली जो बदस्तूरता रोग प्रकृति उपरोक्ते विधि
उपयोगी होय ।

संक्षिप्त चिकित्सा ।

चर्मका शोचित वन्ध होनेके विविध पीडा

में,—नख सनडर इत्यादि ।

चर्मको वेदनामें,—वेनाड, सादुलिगिया ।

घात (घाब) में,—पत्तक, सिपोमिया फस्तरक ।

घसन—घर्षण इत्यादि ।

घाटनेके माफिक मीनम मदिता वा दोत्रेके पथान
प्रसृति प्रसृतीने धरहार करण चाहिये ।

मन्त्रपर ३० श वा । मन्त्रममिशा पुराना
व्याहोर कभी पीडा नहीं रहती पर्यन्त योदित
वन्ध होनेके पेटमें दस्त इत्यस्यन प्रसृति माना रोग
प्रादुर्भाव होना मन्त्रममिशा काममें जो दह पीवत्र
पान-काल बीच बीचमें धरहार करनेसे उपचार हवि
होगे है ।

मातृलिङ्गिया १२ वा ३० श वा । पयमें
प्रसृति वेदना गुद्गहार वा पृष्ठहोदमें पीडा गुद्गहार
हो नासो जो पदस्रस्रहा रोग प्रसृति कदरमें विम्वे
करनेकी होय ।

संक्षिप्त चिकित्सा ।

पर्यन्त योदित वन्ध होके विविध पीडा

नै.—मन्त्र मन्त्रपर दस्तदि ।

पर्यन्त वेदनानै,—देहाड क्वाकवेगिया ।

दस्त (घाट) नै,—दस्त, दिग्नेमिशा पस्तरह ।

पसून—दस्त रद्द ।

गर्भाशयामें—नारकोप नरक ।

जतवालोंकी पीडामें—नरक आरेमिस ।

पट्टनहाडा वा (थगलेडा) (हुइठली) (Whitlow)

इसका प्रचलित नाम पट्टुली-वेदक । इसमें पट्टुलि
कं थपभागमें प्रदाह (ज्वर) होके पूय (पीप) स्रवार
होता है । पट्टुलिमें दय दयानि गरम रोगीकी
दिन को रातमें थमेव पीडा भोग करनी पडे । समय
समय पर समस्त दाय वेदनायुक्त होजाता है । कभी
इसमें शीघ्र पीप नहीं पडता थयवा थनेक लगहन
पट्टुली से दूसरी थगुलीमें भी होजाता है ।

चिकित्सा । रोगकी थयस्था देखके गरम
कममें थगुलीकी लुवायके रखना चाहिये थयवा
एह निभूके बीधन पेद करके उसमें पट्टुलीकी प्रवेय
करके रखना चाहिये समय समय पर पुनटिस देने
से थाराम हो जाता है । जब राध वा (पीप) पडजाता
जाती है तब थरुदारा पीप निकसायके थालेशुला
लोदन से धोना चाहिये ।

धरन चंद्र चिकित्सा ।

५३५ अथवा ।

साइ १००० १ । वा ३ शर्वा । शर्वा
क शर्वा १ क ३ इ लीला इमका लक्षण । सामान्य
लान ३ शर्वा ३ अथवा ३ म ३ नम पौडाकी परि
नहीं है । प ३ इ जानम अथवा क्रियाक पीछे देनसे
न ३ शर्वा शर्वा ३ न ना ३ ।

एनयामनम । वा ३ । प्रवल ज्वला
गतम गृह विष प्रवश जानम पचनशील शर्वा मक्षिष
लक्षण लक्षणम ३ न य प ३ लोवाता है ।

फ नृरिक्त गामड । - लग्न शर्वा अथ
पथल शर्वा ३ नम

हिपार म नफर ३ । पाप पडनेसे पहिले
न्या जाना है पाप पडजानक पीछे श्याकेमिस व
अड्ड का पीनाम ।

मार्कुशियाम । ६ प्रवल वेदना, पाप मज्ञा
पथल लक्षणम य ३ शर्वा ३ देनसे शोत्र शीय भाग होत
है । इसक साथ प्रवल ज्वर चीनस एकोनाड्ड
दना शर्वा नहीं ।

कारणसे अनुमारसे संधिप्त चिकित्सा ।

घोटने मगनेसे—रिडम ।

पल्मेटिला ३० ग्रां। उपरिपाक वा

रत्र रुच्छता हेतु तेज दाबे भाय दतिवार से रातमें
हरि होना ।

एन्टिक्रुड ६ । पाशाणिक गोलयोग हेतु

पीडा, । जिहा भाटा रमक निहा क रुच्छ दानुद्वयमे
हरिम ।

एन्लकामारा ६ । हिम वा टंडा सगमि

पाडा चमोपता वा रत्र रुच्छ गम दाग्वातक भाय
पेटने दरद से परिपाक से चिकित्से ।

रमटकर ६ । काष्ठ ग्लानक पभृति भोजन

हेतु पीडा गपनावस्थाम रजनमे पीडाको हरि से
वातपन्न होना अत मगान्सी कण्डयन (सुत्रनी)
वा रुद्ध हरिम ।

घाटिका—इउरैम ६ । जनकोक मतमे यह

एक उत्कृष्ट धौषध । विगोपत भातवात जानेसे अहा
पेटना दरद वमन विरचन प्रथति उपसर्ग सब उप
स्थित होना ।

एकीनाइट ६ । एर, चस्त्रिता प्यास

रदादि विदगात होनि नीच दीघने यह देना
चाहिये ।

श्याम्भु रिद्या १२ वीं । पुरातनपीडा मक
मांसा धानुसं ।

मन्तर ३० । ग्रह चौर श्याम्भुरिद्या पर
मात्र पयोयक्रमेण व्यवहार करनमे पति सुखभक्षे ई
पच्छा कल प्राप्त होता है ।

दुपिकांश ६ । घामशातत्रे गाघ गरीशं
कमल कमल जानको वच्छामे ।

धानुघ इक उपाय ।

घोषन को ३ । एत इ पल्पने व्यवहार करला
वाचिपे नव । क प । २ का भोजन (दुग्ध वा
दुग्ध - मागु । ३ य । म नन एत न जानमे लैकछा
मदम तरम जनमे छ न थी मरम दुग्ध पति करला
पच्छा जाता है । मधु द विन्डि मधु थी मरम
वशनीय है । घराच मजक पचवावही नियम ।

सन्धित चिकित्सा ।

मरिगामज्जर, चाट्टेना प्रभृति कारकको
दे डामे, — दे डाय ।

रुभंरप्यामं पुनहाम चपयशा गरीर
वा श्रेय के मेमे, — दलिबक ।

दन्तिमर को प्रदरुदामे, — दन्ति ।

उपस्थित होता है । खरद यह दूर न होनेसे गर्भधारण वा अल्पकालमें वामक प्रभव होजाता है ।

वामकोंच एक प्रकार कठिनाकार दातोंके पानेके समयमें कृमि जामनाट खाके प्रकाशित होती है । सामान्यमें यदि साद्विपातिक संघर्ष धारण कर मनन दुर्गम इत्यत्र, दा पूय (सडा हुआ) देखाजाय तब पीडा कठिना ही यह ऐसा समझना चाहिये ।

चिकित्सादि । सेवा दो पथक वाफ्ते विशेष मन्त्र (दृष्टि) रखना चाहिये । रोग काठन होनेसे धान व चावलकीबीजका मन्ड दूध का मन्ड पानीफल वा मटोहा पानो (दूध) वाशि धाराइत व्यवस्था करनी चाहिये । खरका न रहना वा रोग का धाराम दोष (मानस) होनेसे पुराने धारउका घब चखे मन्डका भोजन बकरो का दुग्ध वा काधा बीज सिद्ध करके दानेमें धराव नही है ।

निषेध । गुबदाज गोधूम घटद कसाह मयति क्षा मास गुड क्हा दा । (मावा) तीव्र भोजन दस्तावर भोजन तथा दा घाम का लगना तैल मदन व्यायाम सावित्रादरप सैरुन इत्यादि निषेध है ।

दन्तर भागु धिम दासे बनावन रई रहा पर वाव

हरना दस्त जानेके बाद जनन, मुख की मेखोछा बैठ
जाना बिडबडा निचपडा पमीना पीडा को कटिन
परवस्थामें व्यवहार करना चाहिये ।

व्याप्टिसिया (निघ्नक्रम) । लम रूज
गिरनेसे मुवाफिक पीडा तिम अपेक्षामें ज्यादा
दुर्बलता । मरिपानिक प्रकारको पीडा भीतरमें जावका
माफिक दुर्बलत्व भेदमें ।

क्यान्थारिस ६ । पेटमें दरद दिगावका बेग
मरुणो पातडियोंका पग जैस मनके भाव विम गया
है । जनतानिके सहग मन रह थी पाम युक्त मन
पातडियोंको चाचनि सहग मनमें ।

क्याप्टिकाम् ६ । रह थी पामयुक्त मन
पेटमें दरद । पन्थान्य लक्षण सब क्यान्थारिसके सहग
होनेसे । बेज माहय कहने हैं यह एक प्रधान
बीषध है ।

मार्कुुरियाम सल ६ । पाम की ठी होनेसे
गुद्वार हाचिया नाय मुखमें बिटाको मुवाफिक
खाद मालुम होना दस्त जानेके पहले पेटमें दरद
दस्त होनेके समय टसकणी थी पीछे पेटमें दरद ।
रह न्याना नहीं , पाम मन भी रह प्राय समान ।

पीड़ा में चौपाई में बैठने ही तड़ातड़ो में मल त्याग होना । मन त्यागने मात्र से दरद भी टसकसी दूर होना । रात में चारिय वा मनदार के बाहर निकलना ।

यद्यपि उपयुक्त पोषधसे रोग बहुत भीषण उपशम होता है । किन्तु सम्पूर्ण चाराम चरम्याम मगाया नहीं जाता है । दोष दोष भीषण रह पडना रमप्रकार चरम्याम एकाभा सनफर ३० वीं प्रति देना चाहिये ।

नार्डेट्रिक एमिड ६ । मन बहुत भी रक्तमय गलेका रुष्कपन भयानक दृष्टा टडो का विना समय पायहो वेग भी कुन्यन । पेट में दरद , मुण्डम घाघ वा दुग्न्ध ।

घायनी । जनमय भूमि वाले देग का पीडा परिवारम सधन युग् पीडा घाम वा काब्ब भीषीम ' पधनमौल न जानेसे इस पोषधसे उपकार जाता है । कन्की मादिक मन दुबलता, हाय पैर ठंडा रहनेमें ।

व्यान्कैरिया कार्न ३० श्रवा । पुरातन चाकारकी पीडा, प्रतिनियत दक्षका वेग । गुच्छ दारको तरफ घाघ (खाडा) पडना । गुच्छदार होके रह भी रक्तमय घाम युग् मन पडना । यह ध्याराइटा काब्ब के समान पोषध ।

पीडामें चौपारसे उठतेही तड़ातडोसे मल त्याग होना । मलत्यागमें मांससे दरद भी टसकपी दूर होना । रातमें हारिय या मलद्वार के बाहर निकलना ।

यथा उपपुत्र बोधसे रोग बहुत शीघ्र उपगम होता है । किन्तु सम्पूर्ण चाराम अवस्थामें मगाया नहीं जाता है । बोध बोध बीचमें रक्त पड़ना इस प्रकार अवस्थामें एकनाचा मनकर ३० वीं यति देना चाहिये ।

नाइेट्रिक एसिड ६ । मल बहुत भी रक्तमय ग्लेजा शुष्कपन भयानक व्याप्त हो का विना समय चापहो वेग, भी कुच्यन । पेटमें दरद, मुखमें घाव भी दुग्न्ध ।

चायना । जनमय भूमि बाने देग की पीडा अदिराम मलन शुद्ध पीडा 'धाम वा काब्ज मेशीस पचनपीन न जानेसे इस बोधसे उपकार जाता है । जनकी साकिक मल दुबलता हाथ पैर ठंडा रहनेमें ।

क्वान्केरिया कार्य ३० श्रवा । पुरातन पाकारपी पीडा, प्रतिनियत दस्तका वेग । गुच्छ दारकी तरफ चाप (खाडा) पड़ना । गुच्छद्वार होई रक्त या रक्तमय धाम शुद्ध मन पड़ना । यद्य ध्यारार्कटा काब्ज के समान पीषध ।

(२) प्रादाहिक - यह टडके जगनेम होता है शरीर उत्तेजितहोनेम वा घम वस्य होनेम यह जाता है ।

(३) यजाण भेद, - भाजन जिटा हुआ पटाघ लोथ से परिवर्तितन होऊ मनहार से बाहर निकल जाता है ।

(४) योषकालमे उत्पन्न भेद, - अधिक उष्ण (तावडा) जगनेम यह पौडा होती है ।

लक्षण । भेटके साथ शरीरमें वमि वमि होना पेटपर थाकरा घाममियत भद उहार लोभका चपरिष्कार भाव मूषमं दुगन्धि प्रभृति मरण विद्यमान रहना । चुधाहोना शरुधि वा पेटमें भार मानुम होना योषकालमे उदरामय जानेस मलमं पित्त रहना है तिसके साथ दुर्बलता वा ल्वर भी विद्यमान रहता है ।

कारण । अति भोजन निमित्तवश चादिमें लोभके बगोभूत होके अधिक मात्रा मानापकारका श्राथ पटाघ हेरसे पचनेवाना पलायं, उहा चप क मडा हुआ घन वा तरकरी अविह (विना पक) भोजन अधिक तैल वा मसाला दिया हुआ वा अतपक पटाघ,

मन रुइ चिकित्सा ।

५ प्रथम यत्न मध्य काकडा मोचविन्दी रस
१ म... उ न उका माम भोजन इत्यादि ।

२ २। १ न प्रभृति कारणसे उदरामय होता है।
अधिक २ २३ पुष्कण्डो (ताना) के मनसे यह
राम माना जाता है ।

इस विषय पोषक वृक्ष उभाव शरत्कालके शेष भाग
वा नमनकालके प्रथम भागमें जब गरम दिन से
शान्त प्रभ न राति हय तिम समयकी जन वायु
२ धम यत्न उ रामय होता है ।

मन उ नक माय इस प, डाका विशेष सम्यक् देख
ज १ क १ वा मानासक उडेगीसे उदरामय
होजाना २ मय वा उत्कण्ठा जिम टहिम भय से
निमन भी होजाता है ।

अन्यान्य डा क उपसगरुपम भी यह प्रकार
होता है अन्वयन सयञ्चर काम काम इत्यादि

आनुपद्मिक चिकित्सा ।

अच्छ नियम से
सुन्दर पथ रत्नक वास्तु दृष्टि जरूर रखनी चाहिये
पुरानरोग होनेसे सासान्य व्यायाम करना विहित
विशुद्धवायु भोजन और प्यादि सुनियम रखनेसे रोग
पाराम होजाता है ।

नवनरोगमें जन वानि पारागेट चायकका मन
सुपथ । रोग पुराना होनेसे मृच्छ घा पुराना चाय

क्या केसा प्रकृति तरकारी मसूरका टुप
 गुर, सिद्धि कई मडनेका प्रकृति मसूरका भाग
 तदे वार्ति पारागेट प्रकृति व्यवस्था करनी चाहिये
 मसूर खर वा भात एव विहित । कच वेजका मुराया
 काय नहीं । निताम वासक होनेसे दुग्ध देना
 विहित ।

निषेध । दुग्ध, गुरपाक यो न लवणक दद्या
 मसूर मसूर मास कहारि रना परहर मुग शाक
 गुग्गुलु, सूर्य सारसिरेषका भाग अधिक जल
 मसूर, टडा तावडा चिह्निका मसूर यो तस मदन
 मसूर, रातमं शमरक वा मसूरनादि निषेध ।

सन्तव्य ।

पतिघार एक मसाइका जानेस उमकी तरह पति
 मार कहते है जोर एकमास वा तिघसे मो अधिक
 दिनका होनेसे पुरातन पतिघार वा पहली रोग कहत
 है । पतिघार रोगाका व्यादा सूर्य यो मोस भोजन
 निषेध । मासका काय दनके वास्तु पनेक वेद्य बीसते
 है क्योकि उद्विद पदासकी अपेक्षासे मांसका काय
 मोसप्रोच होता है अतएव यह बातभी सब सोचोके
 विद्यतनही ।

मासिक चट्टा इनमें ही जो मरम दह, पेटमें चिह्न
 कार, जैसे मासिक दमनहार निश्चय (प्लासोत्रा)
 पेटमें दह हर भागमें माया लगा दें, । उन जो पित्त
 चट्टिके भोजन करनेसे चट्टा घी (नेट चामाट) खास
 रसादि कारक भेद ।

दुदिका ६ । प्रतिनिधत्त वमन वा वमन
 करनेकी इच्छा । वमनम इनमें ही जो मरम दह
 चट्टा घातेके मुखकिक कक निकले मरमदह (वा
 घिन कांतक) के पेट रोगमें मन घामकी मध्य मरम्
 दह जो दहवत् भाग भाग वाला । गुड़के गोलेके
 मासिक भेद पेटमें दह दाना ।

पादुरिसभार्सी । ६ । दहदुग्ध मरमदहन
 वमनके मासिक भेद रातमें शिष्टेयताम ११३ वधिक समय
 में इह । मरम चतुर्दिया या गुच्छहार पर मन त्यागके
 पीके चट्टन वमन पेटमें हकार वमनके साथ घात
 ठठन । समस्त चट्टननायामे वमन जो लाला वमना ।

स्यानेसिया कार्थ ६ । पित्त (चट्टन वधे)
 के घरी गन्ध भेद, मनमें मरमदहन भाग युक्त
 विमानकी मासिक । एहा वमन कफमय वमनकी
 मासिक भेद । मरम चट्टीय दाके पेटेहुय दुग्ध वा
 दानाके मासिक मरमदहन ।

बिषमें सादा रोसा वा चर्बिकी माफिक सुद्र सुद्र पदाय रहना । गुद्धदार जैसे फाक होगया है दिनमें वा भोजनके पीछे निद्रा होना । प्राचीन उदरामय रोगमें यह एक अच्छि चोपध ह ।

फाफुरिक एमिड ६ । यहत दिनकी पेटकी विमारी दयवा रोग देखनेस दुर्बल न मानम हो । सादा चा—वा पांडि माटिक गुवाफिक । वेदना गून वा बहुत प्रमाणका मनचाग, शाना । कपडाम मन्त्याग होना । इनदोकी माफिक भेज । पनकी माफिक मन चिमने साथ चावनाक कियेक गृह्य पदाय मसक नीचे पन चाना ।

पडोफाड नाम ६ । नवान धो पुराने उदरा मयमें उपयोग । प्रलूथ (तडकाड) में भेज मन खनकी माफिक वा टधक माफिक इनदिया वा सुवन रगका हलदिया वदमत । वायसरनके साथही मन्का निकलपाना । दरदसे रहित भेद करक प्रातकार्त्में रातन पीपकानमें दुग्ध वा साहाफन भोजन करनेसे वा साएकीक दात निकलनेक समयमें । समान्य पेटमें दरद वा वेदनाशुभ्य भेदमें । पय्यापक्रम थिरके दरद वा उदरामय । मउ त्वानके पहुँचे पेटमें उकार इत्यादि ।

क्रोधादि हेतुके उदरामय,—कनोसिय
कामो ।

पान्हाट जनित उदरामयमे,—काफि
धोपि ।

दुग्धाग्नेके उदरामयमे,—कान काय
दाम, मनफर ।

भेद सो क्रोडवहता पय्योय युक्त उद
रामयमे—एन्टिउड एन्टियार धायना मार सो
मरु ।

भेद सो गिरको पौडा पय्याय युक्तमे,—
दडा ।

टिन सो रातिके भेटमे —सिना पिटो ।

माभन मनर मावके भटमे—एमात्र कान
कडि कभदि दाम री कड ।

रातिके भटमे—एन्टिउट एन्टिउट—मार
कानर कानो धायना उरुडा, एन्टिउट धार
सिम कानरसिना दाम एन एडो एन्टिउट कानर
भियोडाम ।

शिरेशु धीयध पदात् वशलो मिलादि

माकु रियस, एडोफाइनस हरिट्रायसमें,—इन्फा
मारा इपिकाक क्यामोमिना चापना मयत्रवदेमें
—क्यामोमिना माकु रियस मयफर एमभटिना
अजीर्ण—चापना क्यामोरिया । यस्तोमि
आपहा निकल जानेसे—एम्बरस मिकम ।

उपदृग (गर्मी) राग । (Syphilis)

निश्चयन । दुपितम मयम जननान्य (सिद्ध)

पर यह घाव होता है । यह रोग—विष घुसट
चमला हृद्धा मयपाच प्रभृति परम्पर व्यथहार करनमें
सक्रांतिक राग होना है । उपदृगविष एक दिन वा
दो दिनमें पाड़े एकम तान तसाहम रागका आवि
भाव जाता है मयराचर तामर वा छठ दिनक बोधम
मानायकार उपदृग छड जाजाते है ।

उपदृग रोगका प्रथम लक्षण ।

अपवित्र मयमके पाड़े मनुष्य देहम मिय भिन्न सध
एम विषका सञ्चय भिन्न जाता है ।

इन् सब विषके उपदृग वा काय थो फन विभिन्न
है । उपदृगको तीन चक्ष्या परिमलित होतो है ।

प्रथम लक्षण । गभीर घत (घाव) अथवा
वाघी (कुचकी) तिनके पीछे पुस्यके चङ्की अगाड़ी

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

माकु रियास पडोकारणाम, हरिद्रावर्षमें,—इत्या
 मारा इपिकाक, क्यामोमिला चाटना मय प्रवर्षमें
 —क्यामोमिला माकु रियस मकर पम्पेटिला
 पजीर्षम—चाटना क्यामडरिया । यस्त्रोमि
 आपहो निकल जानेमें—इत्यत्रम निवम ।

उपटश (गर्भो) रोग । (Syphilis)

निराचन । दमितस मगस जननभिय (लिङ्ग)

पर यह क्षास होता है । यह रोग—पिय चुहट
 चमदा हुडा मलपास पभृति परम्पर व्यवहार करनमें
 सञ्जासिक रोग होजाता * । उपटशविय एक दिन वा
 दो दिनस पाउ एकस मान तसाहम रागका चावि
 भाव जाता है मवरावर तासर वा छठ दिनक बीचम
 मानाप्रकार उयमग घड होजाते है ।

उपटश रागका प्रथम लक्षण ।

अपचित ममगक रीस मनुष्य देहम भिष भिष मस
 दम विषका लक्षण जेवा जाता है ।

एक मव विषाक उपमग वा काय जो फन विभिष
 है । उपटशका तीन पवस्ता परिनिहित होतो है ।

प्रथम लक्षण । गभीर सत (चाव) चयश
 बाधी (कुचरी) तिनके पीडे पुसके पाहकी चगाही

है । पात्र बन एक रोगके लक्षण होनेका बहुत कम
 सिद्ध होगया है यह छोटाचु टेहके भीतर धत्याहृदि
 होई प्रदाह रोग लक्षण करता है ।

वग परम्परा का उपद्रव ।

दिना नागके उपद्रव होनेसे सम्भावनाके कारण
 वा दूरे महीनेमें गलनाय होजाता है । यदि सम्पूर्ण
 पथस्था प्राप्त होय वे तब यह अनेक जगह मरा हुआ
 भूय लक्षता है यदि वातके अशुभित प्रचलितोय तब
 अक्ष-शान्ति शिरो प्रहार का लक्षण न मानुम होय ।
 महरान्तर वातके अक्ष लक्षण करनेसे चापतत पथ्या
 मानुम होय । तिसके अनन्तर दीय वा दह मत्ता
 हके बोधने वातकेका क्रमसे खाल्याभन को धीरे
 होने लगजाता है । पहले नामा दिग्में जननके लक्षण
 प्रकाश होना है गट्ट प्रेक्षाभिमित लडा हुआ नाइसे
 निश्चयना धीरे नाशिका रन्धुमें घासका दबरोध मानुम
 होना वातके अर्हि हान्द है एसा भ्रमहोना । क्रमसे
 गीनी मस्तिन को बैठे बैठे एककडे उठना वा मोघ
 शक्ति हो के गिर जाता है ।

१ प्राय यहके अन्तमें टगा व अथर प्राणामें को
 दिग्घ हारके अन्तरके तासवय कण्डु (कात्र) निम्न
 होना । तिसके पोहे परीरके पथ्यान्व स्थानमें, विद्यमान

करना व दिने । तब पेट पर एक कुचानेन का टुकड़ा
 व एक पथन पक्का होता है दुबल रोगीको वार बार
 मर्दि व न रना मरुतम वा वेड प्याममे टो करान
 पक्का व 'त इमक विना योडा का विदार होरान
 *

गुणध्या रखापाटा वा ऐजेथो विक्रिया

रुचनम मरुतम

विक्रिया ।

उक्त न दूरा उ पा * । दिनमें महीत मा
 य र न व ल नानको योडा योडा ई
 कानेन रमकन व मरुत वा वेडन रस
 यामरुत मल अर प्य म य'धरता मरुतमप योडा
 वरुत वन मादव कदना है जि यहमें हो मी
 रवा का मरुत कुरनम पिा प वा उदि मर्दि कर्ति
 वरुत वरुत कदना है निवेड मरुतम
 कदना वरुत

यमनिष्ठ ६ । वा ३० । योडाकी प

वरुतम मरुतम दुरममरुत मरुत वा मरुत मरुत
 वरुत मरुत दुर मरुत निष्ठना वरुत यो वेडा दुर
 वरुतमे दुरम मर्दि रहते । यमनिष्ठना वरुत

मूदामें,—वेसाड सिनावेरिस, माकुं ।

वाघीकी प्रथमावस्थामें,—बाध—बायोड
वेसाड क्यासि—बायोड माकुं ।

पारदाटि अपव्यवहारकी पीछे,—बाध—
एनि क्यासि—बायोड द्विपार ।

धातुगत रोगके विविध चर्म रोगमें,—
एसिड—नारट्रिक घुना द्विपार बाध—बायोड, परम
इत्यादि ।

अस्थिर पीडामें,—परम बाध क्यासि—
बायोड एसिड नारट्रिक फाइटोलेखा सलफर ।

धूल (बाल) छठ जामेसे,—द्विपार,
नारट्रोप एसिड—नारट्रिक ।

नेत्र रोगोंमें,—वेसाड सिनावेरिस, बाध
माकुं—एर नारट्रिक—एसिड ।

धालकीके नानाप्रकारकी उपसर्गों में,—
बायोड द्विपार, माकु एसिड—नारट्रिक इत्यादि ।

प्रथम अवस्थामें घाव छूट सास को गभीर होनेसे
घोर सामान्य चोट लगनेसे तिसमेंसे धूल पडके सिम्वा
छोटे घाव उपर दधिसे माफिक पदाय लगानेसे को

केना चाहिये बाघी होनेसे—माकु रियस माइडिज
एडिड घरम काई मीत्रि टैबलिम और इरीरमें दरद
होनेसे—घरम लाइमिस माकु रियास माइडिज—
एडिड देना चाहिये ।

घोषध—लघुघ ।

थार्सेनिक ६ वा ३० । घराघ दाम्भा दाम्भा

घाघ झाकारेन घाघर घञ्जल जजन घञ्जेशमा
मामौष्य घाटनगनेसे रजघाघ घातुमत लघुदघ घाकेड
अपघ्यरहारसे मार घञ्जेने चमराम ।

घरम मिटालिफाम १२ । नीघ लघुदघ वा

इसकी दूसरी लघुव्या झालकीकी पांडा घाकिना घघ
म्यहार नेत्ररोग, अस्त्रिपयन घाकान्न नासिकास्थिर
अघ वा हेरिज घोनरोग नाकके भीतरमें घाघ होड
दग्ध वा सदा घृषा घाघ ।

हिपार सल्फर ६ वा ३० । दन् घो

मधुटा घाकान्त होना घाद घो लघुदघ दोनी हीं
गरागने रहना हस्त्रिदीर्घ वरद माना प्रकार घाघ घो
लघु राग घाघ हाके अरुद घाराम न होना ।

क्यालिघाट्ट ६ । मुख घो मलेने नानामकार

लघुदघ लघुदघ वा मानामकार दग्ध घो लघु राग

रक्त विषरण । (Menses)

स्त्री जननेन्द्रिय (योनि) के निदिष्ट समय पर प्रकृति को स्वास्थ्य विधेयतासे पित्तने प्रमाणका योचित सहाय प्णाय याव होता है उसको रक्त वा रज कहते हैं । रक्त चाय ठीक मात्राको माफिक हानिसे यह शरीरका रक्त नहीं है और शरीरके रक्तके माफिक स्वाभाविक व्यवस्थासे प्रभावट भी नहीं बधता है, किन्तु सोइके अनेक प्णाय रक्त है और तिसके साथ असाय योनिगारसे अस्वरम वाना प्दाय बाहर होता है । इस मस्यन्त्रसे कोई निदिष्ट कारण नहीं किया जात* । मरन क्षियोंके कम को निवस क्षियोंके ज्यादा रक्तु पाव रेखा जाता है । मरार दुषन को मरन पवस्था भेटसे किसी किसीके समयका अतिरक्त (कम ज्यादा र्निसे रक्तु होना) होता है किसी किसीके कितनी को विभिन्नताभा मानुम होता है । किसी किसीके दो मँ-रटिनम किसी किसीके पाच हय दिन को किसी किसी कोक पाठ नव दिनसे योचित बन्ध होता है । यह अधिक ज्ञान तक पडनेसे अस्वाभाविक हेतु रोग बोजक भग जाता है । इस रक्तुका बन्ध को प्रकाश ज्ञानको को- म्थरता नहीं है । इस सोंगोंके देगन ११ म १२ दयक बोचने अनेकधान देगने दो एक बर्य

कारण । लक्ष्मण उत्पन्न हुए किसी प्रकार धातु
 ग्न दीडाम करायु वा दिव्यजीपकी विलति करायु
 का मुखद्वय हाके व करायुका विद्र हक जाना
 कलौषद (हाईसन) रहना । यह मेघीक कारण
 जानेसे वनेक लाग कथत पत्ते हाकर द्वारा वल
 माधन (खाटा खरी) कराना चाहिये ।

किमा किर्म के माररक किमी प्रशरकी दीडा
 न जानसे भा अधक विलम्ब से श्री धमका एतपात
 जाता है । उन्ह वाम्प शिक्षा का कुछ प्रदाजन नहीं
 है । साधारण बहुनही जियोक कतु जानेक पहले
 महान महान कमरमें दार वकड़ार मरीरमें वसुष
 मादमें दार अधम वटका लपव समूह कितनेक
 समयक वाम्प हाक वाव नहाक वापदा दम जाता है
 दार ऐसी जियोक माररका कोरे पीडा जानेकहा
 अनु खान नहीं जाता है । नवदक अनुसार दीवधम
 दार चाराम होत्रता है । और वाय इनहा सब दीव-
 धीका प्रदाजन होता है ।

वाग्द्विद समग्र, वन्देष्टिया माहसिमि
 केरम विमिदिपिदुग वन्दरम दुम्भम वादना वा
 श्रुगम मिश्रिदादिहल ।

रक्षणाव होके तिसका वन्ध । रक्षणाव

व्यानक्षेरिया कार्यदिका १२ । उदरस्थान

धानु माय करि घोर कामी घेर ठंडा रहना घटमें
पद्य होना, दमयन्ता धी सीटा मरार लहर लटना
माया घुरना मवटा मायागम किणो पशारको ठंडा
मग्ना नष्ट न होना ।

ब्रायोनिया ६ । नाभिकाम रजसाव दाट

वहता कठिन धी सुखामय लिए रहनवा इच्छा
भोजनके पीछे पीट पर पदर वा शक्ति मान्य ।

पाफाइटिस् १ + । कभी कभी उ हा या

कम रजसाव धी तिसके माय घट धी एह में दरद ।
ररीरके विभिन्न स्थानमें दाग्हा दाग्हा शुपनी
(कनाडा) घोर घनमें गाट रजसाव । रजसाव कानमें
धोनिमें क्वनन धी चुनकानि । घोजनके पारधम
“एनसेटिना” धार रजकालमें पाफाइटिष प्रधान
दीपध है ।

नेट्राम मियुरियाटिकम १२ । हर रजसाव

बान्धमें प्रभातकालमें कितनेके घटाके वाली विषाद धी
वमन मिष्ट उद्धार धी मानाके माय रजका निकलना ।
हरदोज प्रभातकाल माया घुरना धी आगनके धनेक
ममय पद्य रहना । कीटवहता, मधुत्यागनेस मरुहार
फटके तिससे रज पडता ।

जात्रा होना जो मरपक्षी माफिक पनपाना रजसावसे
 बदसे मादा वन बाहर होना दोष बीचमें दृष्टिमें
 धधनापन होना पैरोमें घाव होना समावत पैरोका
 पयोना बावरो बन्द होत्रासे रसी पीडाको हृदि होनेसे ।

यूजा वा सिलिसिया ३० । जो बीचसे टीक

दिया हुआ पताव होनेसे हेतु भूत पीडा होनेसे इस
 रोगकी उपपत्ति होनेसे व्यवस्था करना चाहिये ।

रक्तुका पाधिक्य वा रजमाधिक्य ।

मेनोरोजिया † (Menorrhagia)

रजसाव सबकी बराबर नहीं होता है । किसी
 किसी वयकी कन्यादय अधिक रजस्रवितो जाती है ।
 जिसद्वार सदा रक्त होती है उसमें ज्यादा साव होनेमें
 भी रोग समझना चाहिये । ३१२ दिनमें अधिक साव हो
 भी कहता है या रज रज साव लैडिन अधिक
 काल तक यह बतमान रहता है यददा मामुनी साव
 छोड़े अनूके पत्तारकालमें खेरसे सहुका प्रकाय होना ।
 परीर दुर्बल होनेसे भी मानुम करना चाहिये जो
 रसाभादिह वयसे रक्त निगमन होता है ।

पीडाका कारण । जननेन्द्रियमें किसी प्रकार
 को पीडा ददा—दधुंद वन, ककटिका रत्यादि

मोह, धाममें भन् भन् करना व देखाई न घटना
पेट पुनगा उकार धामसे भी न घटना, प्रायही वेदना
विहीन रहमाव ।

मेथार्डिना ६ । उल्वन सार वा काना चडा
चडा रहसाव, कमरसे पेटके धामने तक रह रहके
दद मानुम, सामान्य हिलते चलते स्त्रायको हडि किस्तु
चलते फिरते स्त्राय काम ।

ट्रिनियम ६ । स्वभावत अधिक स्त्राय, ऋतु
बन्ध होके १४।१५ रोजके बाद हिलते होवते परुष्मात
अधिक रहनिगमन प्रसव वा ग्भस्त्रायके अन्तम लिस
लिसको साधारणत अधिक रहसाव ही सकता ह ।

सिलिसिया १० । अभावस्था, वा पूर्णमाकी
बोद रकम विमारी हात और पैरके तनू पसना
होना ।

याफार्डिटिम् १० । मोटा शरीर, हात और
पैरके तनूके दुग्धपु पमिना चन्द्रम गाना प्रकार
घन और बहासे रस निम्नन जानके पिडे घाव ।



घोतेकी विमारी (पकाडटीन) Orchites

रक्तमज्जासन्निभे गृह्यद्द जानेह कारण मर्मांशं पुञ्ज
उत्पन्न होता है मर्मे छोटी बड़ जानेको पकड़िया
कहते है ।

कारण । स्थानविषय अधिक असना लस पर
दाय पन्ने रक्तमज्जासन्निभे पलस पद्द कोटवता
पिह वा पन्नाय कारणसे ये पीडा लपती है । टडा
सन्ना वा समावसा पूर्णमाको एक तरफसे पोतेमं
दद वा खुषार होना उसको पकड़ियाका स्वर कहते
है, या कान्ठ वा पतिहा स्वर कहते है ।

चिकित्सा ।

• ठडा मुगके दद होनेसे,—रसटस ।

चोट भगनेसे,—पानिका ।

प्रमेह वा धानु की विमारी के थाले,—
माहूँ पन्म ।

यहुत दद होनेसे, - क्षामानेतिष ।

अमावस्या पूर्णिमाको वृद्धि,—श्यातव्रिया
वा धारसी ।



सकता । अपरिष्कृत लज वायु वा माधारण रोग उत्पत्ति का कारण बगैर इस रोगक उद्दीपन कारणके बोधम होता है देखकर, शरीरमें सन्नाप डाम इसका एक प्रधान कारण है वह बोलकर स्थिर किया गया है । इदानीं के बहुत से चिकित्सकगण कोमा ब्यासिली (Coma Bacilli) नामक जीटानुसे इस रोगकी सृष्टि कोलक निर्देयी किया करत है । जिस कारण हा इस रोगको दृशित करके तब रोगका प्रकाय मुखभादमें हुआ करता है । इसवाला इस रोगक आगम बहुतसा लक्षण देखा जाता है । वह लक्षणविशेष चार भागमें विभक्त किया जाता है ।

प्रथम वा आक्रमणवस्था । (Period of incubation invasion) इसमें विष शरीरमें प्रवेश करके रोजाना वृद्धि प्राप्त हुआ करता है । दो तीन दिनोंमें कभी कभी एक सप्ताहक बाद सर्पिलता सामान्य उदरामय किसी किसीको अल्प पित्तमिश्रित या विना मलका दस्त और कभी कभी पेट भारी मानुस करना या पेटमें दद सहित मलत्याग हुआ करता है । कानमें दम् दम् भन भन शब्द गिर पीडा बमन रुद्धा मानसिक अवसन्नता वा शरीरकी दुर्बलता अर्थात् अल्प प्रकाय होता है ।

भरण का हो जाता है और उन्हीं ट्यूबक पसना, ठण्डा कम हो जाता है ।

उन्ही चरब्या में आराम न हो क छोड़ा बट क हतोय वा पतन चयम्यामें परिशुत होता है । इसको एनजिड वा कोलस चरब्या कहा जाता है ।

इसमें ऐठना बमन दस्त प्यास धार शीतलता अधिक बटके रोगीका भयानक बट जेता है । गुद एक दिन बन्द जाता है । चन्द्र भाग बन्दका बरफक मासिक ठण्डा हो जाता है । रक्त चमता छोड़ा होनक कारण शरीर का दस्तादि गिथिलता हो जाता है । पस बन्द हुइ जाता है । दृष्टि नीना देखाता है शरीरमें घुटकी भरनस इसका दाग बहुत देर तक रहता है । मुखमण्डन वा गरनस बन्द बंद पसोना हुपा करता है पेट फुल जाता है शरीरको जलनक शाय्ने इवा करना चाहिये । अगुनिया पानीमें रखन में उसे मिहुडा जाती है बसे हो हो जाना । व्याकुलता का बन्दना मदिबन्धमें नाडी का न मानुम पड़ना कभी कभी कोहनीके पास (त्रिक्रियास) शीर बगन (एकत्रिभारि धमनीमें) तक नाडी मानुम नहीं पडती । गन्धोन छोड़ा छोड़ा दस्त हो सकता है लेकिन दस्त बन्द होवे पेट फुलता है और रोगीका आशाज बन्द शीर ग्रास बट उपस्थित होता है । पृ



रक्तमिश्रण कहते हैं । इसमें बाँध लाने कोम सुधी
 निम्न गुरुता के काँटा का बनाव होगा तथा
 बेहोश का सत्य हाक रोमीका भावन नष्ट करता है ।

(ग) विश्वास नष्ट हो उपस्थित हाक टारपेट
 चर का लक्षण देखा) मर सकता है ।

(घ) पुत्र म रोगी रम रक्त चरामिने दुयक जानम
 विश्वास ध्यादिन का मजता है । साथ साथ कर्मि
 तत्र होइ बाँध बिमह अनिक उपक्रम जाता है ।
 गौर धीर स्थानमें नासाय पाता या पुत्रपाइमें धार
 होमता है ।

कर्णमूल और फफुड़ा में जन्म हो सकता
 है बसत या हिलेकामें रागोका विषय लग जाता है
 निश्चित हम मनमें या हामिषाध्यायिक मतम चिकित्सा
 हामिष (धारक वा तैलमकर उच्य वाच्य) अधिक सिवन न
 करानम हम उपसग का हारघत हर नहीं रहता यह
 हस्त प्रथम विषयार्थि मय्यद साध्यातिक राग है । हम
 का विष चम्बनालोका (Internal Canal) विषय
 हामिषे चारुमय करता है । अहा बहुम्यायो धाकारम
 केना म होइ जगह जगह ही चार हुषा करता है
 अहा हके उत्तरी हर नहीं होती । हममें भीत पेटमें
 हामिष हामिष जगह जगह चोर बसतमें हामिष
 म प्रम मय का बाहर होता, और यह मयन भूरा रम

जाय, है। वही कभी पैसाही मयम पाणाम नदन
 कर्षि यथा यथा करणारं (याथर लो मिश्र-
 न्नादि मार उन्टी हुया करणैमि) इतिनाक
 (यथा मयन) माद मारहा कपहा न लुान
 उकना द्दुदु दारदा मयही नुद न द हा
 ननन हरण मयता रदवन याम नका दार
 मयम नका नही दारनन दगा सुद याम मयना
 मयन नका उ उठन नैर रननन निक्कनु नैना
 नदिद ।

दाटे दाटे नडकोदी - न १ न ६ दृषमे

इतिनाक यथा नै नदन नुन रडे दनमे दनर
 धरन मयननन नन - ६ मय नैनाय द हा वरन
 नननन नु नन दानननन न नुदम मिदुन ननयन
 यनन । नामकता न दगा नननता नैनन नदम ययथा
 ननन नो उयहार न दानन मयनन नना नानिद ।
 न १ न १ न १ दन नुदा नननैमि मयनियम—
 धरन न नान नैयय नन मयनननाना । नैनाही दृषया
 यनननै मयनन धीर ननननानन (पेठन) नननन
 ननन (नई लो) निनेन ययथा याननिय मयन
 ययथा ।

भी देखाव न हो चयवा बहुत तजनाक्रमे कुछ उद हो
 हो या न हो तब बगान्यारिम देना चाहिये । चाख
 मार म्याप मभति मानुम होनेसे बेनेडना मारसेमम
 या हामनिदम देना । मन्नाको चयम्यामं दौर घोर
 दशाव पायदा न होनेसे चक्षुम दना । छमि नक्षप
 होनेसे मिना २ दो तीन मासा मवन करनेसे पायदा
 जाता है । (यदि दिवको जानेका धममे रोगो
 धमक धमकके उठ पडे वा क्काम सुनाइ न पने तन्)
 बनेडोना । दिवने एवने दिवडा हानन — चाख म्पि
 टावमिम । दिवकोके माय पेटके मतर म्पि जाना
 दौर दद करना देहायमें देयाव जाना दौर मुखम
 बराम मिहमनेसे हाटोमिम । मानक बपन या
 कम्पान तनाहू पी नड वाक दिवके उ उ वागका
 दम पटका जाता हो तो दन्भटिका । हाउ बडोव
 निडे एमेपिया । दिवकाउ म्पि मायने दन् रहने
 म — मन्वर । जिमी तरह धम न होनेसे चामनिदम्
 जो हमसे भी चामन न हो तो कम्प देना ।

सेवेके दद सुधार होनेसे एकोनारट एवमे ध
 बन्धि चयवार न हो चारी म्पेरने दद वने रहनेसे—
 हाटोमिया दौर रमटका चारी करके रुझेमान करना ।
 सेवेके वाक पेटका विमारी जानेसे—धमस्रिक पक्षिड
 उमसे पायदा न होनेसे चादना दिया जाता है । सेवे

हैजाकी रोकथामका उपाय ।—साफ

गोब्रा बर्तान, भांग इत्यादि मज्जा करनेवाले वात जागना
विषयक वा ज्यादा भीजन एवं पका भाजन वा बामो
पाना प्रभृति को सब बारण्डे देना ही सकता है
यह नियम ।

हैजेज बसत गामेज नून ठनी करके पाना बहुत
करके है । जब चारों तरफ हैजेज की महामारी उपस्थित
होय तब भी कृपम २० हर दो दिन बाट एक एक
टके पानिसे उपकार ही सकता है । लुण्ठ भीतर
गन्धकका चुका भरके पाने पहिननसे देना हीनेकी
गन्धकना कम है इसका मयाव एक पैसा वा एक छेउ
देना ही करके कसबसे पहिननसे भा हैजा नहीं
होसकता एसा लखा गया है ।

स्वाम्बर व स बावन व उन जानेका उपदेय है
किन्तु यह बहुत दिन पुन पुन खाके पीकी बिमारी
वा बन्धनमें दस्त होत दया गया है । इस लिये कपूर
क्यादा करके व्यवहार करना भी कभी उचित नहीं
है । हैजेज बहुत खुब साफ पानो पीर ताजा खुना
बहुत जरूरत है । किन तरह पानो साफ करना चाहिये
यह तन्तुदस्तो को बित्तवमें देखना चाहिये । हैजेज
बसत रोज सबेर व शामको घरमें घुप व गन्धक प्रभृति
का धुपा देना व इनका प्रफुलित रहना अच्छा है ।

धीर हास भी ठरटा मासका चाना नाना धीर धीरे
धीर टान टानडे जेकना । धीरने नवा फरना । धर
भर माडीका मो" । रक्तमहित दस्त रमने ३० की
महो पायी है ।

एकीनाइट (हिमाग अबन्यामे १ x, प्रति

क्रियावस्थामें ३०) रक्तुभय धर मरुण महित
दस्त बेचेनी देट दट घ्याच इतजिष्टकी क्रिया
कम लोरी । डाक्टर मन्मूनान्न वन्यापाध्याय यइ पहिले
ने ही व्यवहार करनको कह मये हैं । इसके प्रयोगसे
पस्तर काके रोगकी तना घट जाते देखा गया है ।
हिमाग अवस्थामें सामनिक भिरदाम प्रभृतिसे विजन
होने यह दशन विशेष फायदा हुआ है ।

एनिड हाइड्रोमियानिक ६ । डाक्टर सरकार
ने इसको सतमपोयनीको बिलाव दी है । नाडका
गायब होना रुब शरीरमें ठटा पमीना वगैर इच्छा
के दस्त, खासमें कष्ट धीर पटामो देटमें दट
इत्यादि । डाक्टर भादुडी महाशयने इससे बहुत रोगियों
को चाराम किया है रोगी खान न सक तो चाप
देना या भुजानेसे भी काम होता है । इसके करनेमें

‘सरोसिरेसस ३ दिनसे व्यवहार होता है ।

दायकी दृष्ट्या प्रवल होनेसे निश्चितचित्त कई एक दवाएँदोमें से जिसमें शुभ लक्षण मिलने वही देना चाहिये ।

क्यान्यारिस ६ । घडी घडी वेमाशकी दृष्ट्या वयैर वेमाश न होना मूत्रविकार प्रलाप तन्द्रा पक्षमोह ।

टेरीविन्वीना ६ । क्यान्यारिसमें उपकार न होनेसे व पश्चाधिक पेट फुना रहनेसे यह दवा लफरी है । कभी कभी यह घण्य होनेसे क्यालिबार्ड ६ या विलेडोना ३० देना चाहिये ।

मन्निष्क लक्षण ।

मूत्रवधके साथ वा मूत्र त्यागके बाद भी यह व्याधि हो सकती है । लक्षण मुनाबिक नीचे विषया दृष्टा दवा व्यवस्था होता है ।

विलेडोना ३० । रोगीके किरमें दद प्रलाप पाँच साल ।

हायसायेमस् ३० । सुदु प्रकारका विकार, सङ्गेद पाण्य पल्प प्रलाप इत्यादि ।

शामोनियम ६ । रोगी भौकसे उठता मारता, चिन्ताता इत्यादि ।

पपियम ३० । मगठ विकार, चीपता,

पेट फूलना ।

पोपियम ३ । डायर सावहार इसके बहुत ही पचपाती है । एसेन्सियल शिक्षासे यह ज्यादा मात्रा प्रयोग होनेसे कुशल प्रयोग । ऐसे मौके पर हम लोग नफ़्तमिहाके पचपाती है ।

दुर्बलता और सामान्य उदरामयने—

एहिड कम खाना श मन्तर ३ ।

कृष्णमूत्र प्रदाह ।

मार्क-सल ६ । एहिसे प्रगह रहनेसे यह दशा ।

एिपर सल्फर ३० । इनके उदरामने सेय नही हो सकता है । नियमने से प्रगह दशा नता है ।

बेनेडना ६ । एर हिर दह नहिन कयनून प्रदाह ।

शय्याघत ।

एहिसे ६ खाननेसे १२ वा एहिसे ६ एघा ।

हनि लक्षण ।

एर ही पेटने हनि रहनेसे से प्रगहके निता है, तथा (दिन) एहिसे गुण मचाना शिखी

ठट्टा सगडे बेड खानिसे पुदयका पोता रोर रोरती
की हाती फुल हाती है ।

चिकित्सा ।

मार्कुुरियम्, चायोडेटस् रुद्रम् ६ । दमशा

चूर्प दिन रातमें ३।४ दफे देना पच्छा है ।

द्विपार सन्फ (३०) निनन दो वल्ल दमेसे
दद बटने नहीं सक्तो ।

बेले डना ६ । फुजनकी वगह सानी व ददं
धीर बुषारमें बाहिषाद बकना । हामक बाद पाडामं
यह पायदा करती है ।

पलसेटिल्ला ६ । सून या पोता फुजनेसे
यह दवा देना मुनादिव है ।

धीर दूसरा उपाय । गरम पानोका सिद्ध
देना धीर फनालेन वा रुध्धर बाधक रखना , ठटा नहीं
सगाना । रुध्धे शिषाय मार्कुुरिस ६ क्वासकरिया, रुध्ध
टस वगेर केवन किया जाता है ।

कपर्दीगूल वा चमडा दद (द्वयार एक) ।

(Ear ache)

निवाचन । खानने सानी पावात्र धीर इनेसे
तइटीक, दपदप् खरना, एनाइ नहीं देना या सुब

मशररमें रून व दुर्गंध होनेसे कठरे रररररी रररररररर
ररर ररर ररर ररर ररर ररर ररर ररर ररर ररर ररर
ररररररर ररर ।

रररररररर ३० । दुर्गंध रररररररररी मशरर

से ररररर ररररररर ररर ररर ।

ररररररररर १० । रररररररर रररररर

ररररररर रररर रररररी रररररर ररर ररर ।

ररररररररर ६ । ररररर मशरर ररर ररररर

रररर ररर, रररररी ररररी रर ररर रर रररररर
ररररर ररर ।

ररररर ररररर । ररर ररररर ररर ररररर रर

रर ररर ररररर रररर ररररर ररर ।

ररररी रर ररररर (Cough)

ररररी रररर ररररररी रररर ररर रररररररररर
ररर रररररीररी ररररर रररर ररी रररर ररररी रर ।

ररररर ररररी ररररी ररररर ररररी रररी रर । ररररी
रररररर रररर रर ररररी रररी रररर ररर । ररर

ररर रररर ररररर ररररी रर ररररी रररर ररररर
रररर ररररर रररी ररररी रर । ररर ररररर रररी

ररर रर ररररर रररी ररी ररररी रर । रररररररी रर

घाने और बिहानेसे धीमी ल्पाने ही और खादनेके समय माया खरदन्ध और हातीमें दाब धरता और उसके साथ हातीके भीतर दरद बाध जाता ही तो फ्लूरस देना उचित है । यदि मध्या रा रातके समय दरदमें रुनेके भीतर गुडगुडा बोध ही सुधी धानी पाये और उसके संग हातेके भीतर दाब धरनेको भाति बाध ही तो फ्लूरस १० ग्रानि देना उचित है । यदि रातके समय विगय करके सोनेपर दमहा आग ही लेकिन उठके बैठने पर धायो न ही और उसी तरह धायोके मडू घ घाना न उठे ही धायो उचितमम देना उचित है । इस तरहकी धायो धायो हाटनेममन न घटने पर (विशेष कर धमीरुंके बाद) पन्धे टिला दिया जा सकता है । यदि दिनके समय धायोके मडू घे घाना उठे और रातमें कुछ न उठे तो पलघटिना पन्धा है । इस तरह धायोके मडू काटवह रहनेसे नसममिका और लडकाके पधम (विशेष कर मध्प रहके पतने दम्य हाती रहने पर) ध्यासीमिना देना उचित है । यदि एक घाट ठला पन घेने पर धायो घटे और खादनेके समय दम घटनेकी तरह भाव ही तथा धाने पर गरीर धाय घेर बाध तो रुपम देना उचित है ।

दवा लक्षण ।

पहिले एकोनाष्ट १ म रुद्धित घण्ट्यावळमने रुद्धित
६ श्वहार करना उचित है ।

इससे शायदा न हानिने जन्मिषिटार्ट ६ । खरमडता
घोर करम भाव देखनेसे दिवार मनपर ६ । मस्तिष्क
वाकान होनेस फस्करम ६ । दचतम्य भाव ल्यादे
देखनेस दो एक मात्रा जोदियम ।

डाक्टर साबजार योस्किन (Kaolin.) नाम दवा
देनेको कहते हैं ।

डाक्टर योयुक्त इरनाथ राय महाशय दिवारके
पसपातो हैं । ज्ञोमिदम वा थायाडियमस समय समदने
कायदा पाया जाता है ।

जामल (नेषा) । (Jaundice)

जो श्लेष्म सदा शुष रहत है रात जागत विस्त गिरा
दे घाते, मद्य पीन वा अन्यान्य नगकी वस्तुए ल्याद
श्वहार करते हैं उन्हें नेषा रोग दाखलता है । नेषा
रोगमें पाख तथा मारा मरीर पीला दाखलता है । पगाब
देना माल परन्तु मसजडा रूढ़ जोका घोर कभी माहा
रूपा करता है इसरु सडू घोडा बहुत शोखार भी
रहता है ।

हर घबि और मोत बोध हो, छणा न रहे, मस्यक
 क कट खादे हा तो चर्ममिटमा जना । यन्
 अभका रह घोडा घोर मुख तोता होनक महु पिम
 मम हो किमा चर्ममिटमा पाकर फाटना म जो तो
 यामोमिमा १२ दिया जाता है । छोटे छोटे सङ्कवि
 जेवा जनेमि विरेष करक उमक साथ सङ्क का मथना
 गड और कोर मोदम लेकर टपने पर गुप हात रपा
 जाता है उस समय यामोमिमा जना जरुरा है
 यामोमिमासे पाठदा न जानगे मकममिमा जना ।
 सममे भी फाटना न होना साकरिम लिया जाता है ।
 मभारह्माम रम रागम मफ्फरम भी चन्दा है ।

वानुमद्विक उपाय । इलका और मरुत
 के प दप है । मइली मोग यामा मना है मामाण
 यामा मममानीवु ममरम धार चन्दा कई मल
 दाना चन्दा है ।

कृमि । (Worms)

कृमि विविध रोगक कारण पना । धान है ।
 कृमि कई जातिह जेवें जाल है । मइ तरहह ममिज
 ममरम नाम ॥८ - है । रने साथ लई

मध्यम चिकित्सा ।

गमावन्त्यानें क्षीणवहता । एतन्निष्ठा, मध्यम

सोपिदम विदित्वा ।

सूतिश्चा देवमे, — वादो न्दा ।

पगंरोगोक्षी, — वामिन्देन्त्या मन्वर ।

पान्दमोनीगोक्षि मन्त्रमे — वादो म्द

मादशोद सोपिदम म्द ।

सुनावनेमेरे वाद, — वादो म्द म ।

मन्त्रान् । वमने पान्दमोनीगोक्षि विदित्वा एषा
 दोष विदित्वा म्दमोनीगोक्षि विदित्वा देवमे विदित्वा
 पान्दमोनीगोक्षि विदित्वा म्दमोनीगोक्षि विदित्वा
 म्दमोनीगोक्षि विदित्वा म्दमोनीगोक्षि विदित्वा

गलेहे मोतर दग्द पौर धार ।

(Sanskrit, I 22 3)

निष्ठां वन । मनेरे मोतर पान्दमोनीगोक्षि विदित्वा
 दोष विदित्वा म्दमोनीगोक्षि विदित्वा देवमे विदित्वा
 पान्दमोनीगोक्षि विदित्वा म्दमोनीगोक्षि विदित्वा
 म्दमोनीगोक्षि विदित्वा म्दमोनीगोक्षि विदित्वा

गन्धेरे भीतर घुसा रहना किन्ना माधुन घोले बजकी तरह सार गिरना घास न रहनी घुनी जगह हवाम चाराम घोर घरेके भीतर रहनेमें तऊनीक घोर में एपिस ६ टैने का लक्ष्य है । टनमिनका यह मन्त्र पराना हो जानिसे विशेष कर यदि पहिले दाहिनी तरफका टन्मिष घोर उमके बाद बायीं घोर का टन्मिष पीडित हो, तो लाटुको पहिले १० गु रोज न बार देना होता है । इसी तरह त्रिनक घोर वा त्रमे चरामी घरीं जग्नेस हो टन्मिषका रोम होकर कनेका उपक्रम होता है विशेष करके दाहिनी तरफ त्रिनमें मन्त्र होनेसे उमके दाप्ते वैराट्टा-कार्य ३. घोर बायीं तरफका टन्मिष पकनेका उपक्रम होनेसे मिलिसिया ३ पावम्यक है जैम तरस वस्तु पीनेके वरु दरद बोध होनेसे 'वेतोडोना दिया जाता है उना तरह खडी घोर जानेके समय दरद बोध जानेसे व्याप्टिसिया १ x देना उचित है । काई वस्तु निगमनेके समय गनेका दरद यदि खानक भीतर तऊ पदुचे घोर उमके मडु गनेके भीतर मानो कुछ घटका घुसा पेसा बोध हो तो लेन्सिटम ६ देना होता है गन्धेके भीतर मडुनीके घाटकी तरह बोधा है एसा वस्तुमव होनेसे घोर उम रोगैक देहमें

इसके सिवा क्रियोत्रोट एन्टिगुड कुपम-पाम
१२ व्यवहृत होना है ।

साधारण रीतिसे सवेरे चार सामको दवा प्रयोग
करके फलही पतीचा करना चाहिये । बार बार दवा
बन्दना वा बारम्बार प्रयोग हितकर नहीं है ।

गभाशय्यामे काष्ठशुद्ध ।

पूरु गभाशय्यामे काष्ठशुद्ध विषय रोग रुद्धक नहीं
गिना जाता । तत्र इमक हेतुमे भूषणकी कमी रोंट न
जाना वगैर यन्त्रपादायक उपमग्न हानिसे नीचे लिखे
लक्षणे अनुयायी दो एक दवाकी व्यवस्था करना
चाहिये ।

त्रायोनिया १२ । श्लेष्मकाल की पाडा
शुद्धतका दोष मक्षकमे रह सक्षय ।

नक्सभमिका ३० श । यदाक बारम्बार
मनदानकी कोमिय पर कोठा साक न होना यह
पुराना कोष्ठशरोग । इसके सह मन्फूर ३० श ।
पद्याय कमसे हेवन करना चाहिये । हम समय समय
पर ' कलिन्सोनिया ६ ' वा चारहुाटीस १+देकर
फन पादा करती हैं ।

सोनेके बल और भीरके समयमें ठण्डा सल पीना
गरम दूध पीना हितकर है । किसीरे री न्या न

जिन्दा जीवित रहता है । एकाग्रता र्भ्रमसाय होने पर फिर भी होनेकी विषय चायहा रहनी है । विमल होनेमें र्भ्रमसाय हो वह महीना चान्दने विषय भाव धर्मसे रहना चाहिये । र्भ्रमसायसे यिदके एहन र्भ्रमसाय वा प्रसूतिका भी आवन नष्ट हो सकता है ।

लक्षण । जैसे मानसिक अनुसाराइ समय बदलता होता है । वैसी ही र्भ्रमसायइ समय भी शान्त हुआ करता है । चाय चानने चन्दिष्ठा विषयता फिर लक्ष्मसे बदलतीह रहस्यार कटिदम और उदरने काटन के तरह दस्यवा और उत्तरात्तर तकनीक का बटना । चाये टरद उदरिन्त हाकर उरुइ बाइ लनसाय और भ्रुइ बाहिर होता ह ।

कारण । गिरना पाषात चादि बाहिरों कारण उ से ज्ञान पर पैर पडना भासो दनु उठाना चमन नानन वैच नार्डी पर पटना सामो महशस. मानसिष्ट चरिये और र्भ्रमसायकारा चैयथादि क्षेत्रने र्भ्रमसाय का सहा है । इसके मिशाय बहुत दिनोंके म्यादी मर नसेरिदा कोषार त्रिभूविज्ञा रोग, क्वादे लोभम जीभा चरना । रात जायना और भ्रुइ कसके बल पडिरन चरना भी इसके कारण हुआ करते है ।

चिकित्सा । सिर होशर होने देना चारों है ।

गर्भावस्थामे शय ।—इत्युक्तम् एतन्न
नस्य नस्य मन्तर ।

गर्भावस्थामे न्यावारोग — कम्परम ।

गर्भावस्थामे प्रदर ।—विश्वस्य चारंङ्गाम
नेनियम चौर ।

गर्भावस्थामे पक्षाघात ।—एताम चाम
द्यो सादको, कम भिविया ।

गर्भावस्थामे रक्तको ज्यादतीमे म्यूनता ।
द्योने माळ ।

गर्भावस्थामे मुखमे जल उठना । स्थानके
तथ्य च्यापनिकाम नस्य एनम ।

नेत्रपदाह । (Ophthalmia)

(आख उठना ।)

निश्चाचन । पाखक कपर या चांपके एन
कक नाचेवालो येमिहभित्तोके मन्दाहका नेत्रपदाह वा
मनस्येव चिकित्सा पाख उठना कहते हे ।

कारण घृनिक्ठना, एत्यरके कोयले का चुरा

पाराम हो जाता फिर होना, इसे सेवनमें रुका हुआ कण्टु फिर बाहर होता है ।

सिपिया ३० । इसका बाहिरी प्रयोग करनेका भी उपन्येय है । समकरके मनहम वा अपथ्यवहारके बाद इससे अच्छा फल होता है । छिद्योकि मर्ज, मध्याह्नं वाहं प्यादं कण्टुदन दटना ।

सल्फर ३० । यह प्रधान दवा है । कण्टु, दन घोर जनन । मध्याह्नो गरमोमे जितना सुप्साया जाय उतनी ही एक तरहकी पुर्ती घोर ज्वर बोध हो, मूत्रलाइटिक वाद यह प्यान फट जाता घोर नह्न भरता है । घमडेकी बरछराहट घोर खानका उठना दिखता है । इधर उधर मरल कैपडो हाना बीच बीचमें गठ फुलता ।

मक्षिम चिकित्सा ।

रुग्ने प्रशारकी सुत्रन—माकसन घोर कलकर रगायकसके हरक रात्र ११२ बार व्यवस्था करनेमें रोगही कायदा जाता है । उमक बाद दो घार माथा कायमेत्रि वा हिपार समकर दनेस रोग दूर हो जाता है ।

पोशुद घमोरो (घमडा) में कलकर तथा नार ; वाप घम्यादकसम लेता होता है उसके बाद यह रुध

राम हो जाना फिर होगा, इसे जीवनमें रखा हुआ कण्डू फिर बाहिर होता है ।

सिमिया ३० । रामका बाहिरों प्रयोग करनेका ही उद्देश्य है । मनकरके मनहम वा अपघ्नवहारके बाद इसके अच्छा फल होता है । स्त्रियोंके मर्ज, मन्दाके वह ल्याट कण्डूजन बटना ।

मन् फर ३० । यह प्रधान दवा है । कण्डू जन और जन्म । यस्याको गरमोंमें जितना सुन्नसाया जाय उतनी ही एक तरफकी कर्तों और ऊंग बंध ही, सुन्नसायाई बाद यह स्थान फट जाता और लड़ता है । समझेकी बरखराएट और खालका लठना बना है । इधर उधर मान फण्डो जाना बांध 'बम' म'ठ फलन

मद्यिम चिकित्सा ।

सुनि प्रकारकी सुन्न - माकमल और मलकर 'शोथकमल' इतक रात्र २४ बार व्यवस्था करनेमें स'वहा फायदा होता है । जबक बाद दो बार मात्रा 'अथमत्रि' वा 'द्विदार' मलकर दनस राम दूर हो जाता है ।

देवदुल प्रसोर (सुन्नडा न मलकर तथा बाद 'बाद' दवाक' मलन' जना जाता है । जबक बाद यह सुन्न

सक उठा करता है । १० दिनमें ऊपर नहीं रहता तब इसमें विशेष चत्वादार हाथम कटिन उपमग घामकत है ।

परिणाम । कड एक दिनक बीचमें ५१ पमाना वा शरारत कण्ड थोडम एक तरहक फफाले नै जात है । इसमें कण्ड धाराम हानका घामा कोषाना न धार करे भा पस्त्राभाविक चपस्या नही रह जाती ।

रोग निवारण । पख लि खत कारणक धारम दृष्टि रहता जात न एक दिन दोतन पर ही घटती इतनी तब का मसभा जाता है

चिकित्सादि म कायी उपाय । रागोक धारमें कड न रागनी वा भा न भा न करना चरित नही है । गद्या मन् कुचन धार अधिक साग न ही । चरक पहिली हालतन उपाय चप्या है ।

पद्यादि । घाम धमान का वरक चप्या नहीं है । चप्य परिमाणम तण्डा जल वा गरम लस दना जाता है गरम ननम जलन घाम धमती है । जल धावू जलवान दूध मिला कर रागोका घामे खी दे । टटकी धार चप्या है । धनार वा वेदाना घाने देना विशेष हितकर है । उदरामय न रहनेसे

क्रिया थीं ज्ञानार्थ रोगकं माद्य कृत्वाचित् स्वम ई
मकता है ।

त्रिकित्सादि मङ्कारो उपाय । मेरुकां
अरुण प्रयोग थीर रागोको निश्चय तथा अर्द्धरुचि
म्यानमं रक्षना जागा । ज्योद लागीको भोड
अनेक तरहको बात चान करनेम रागोका उत्तमना
सकता है सामान्य उत्तमना जानसे हो पुनश्चर पाई
पारम्भ होना है । निश्चयभाव से अपेक्षा हत प्रका
होन धरम रोगोका रक्ष दवे ।

दवाका व्यवस्था ।

रोगकं निरी नास निश्चो त्वाद्या लक्ष्य अनुव्या
अवहुत कामकर्ती है — एमिड हाडडा एकान पाचिक
एहृष्टराभिरा वेनाड मिक्कटा कुप्रम हायमा इर
परिकाम नक्षम ध्यामिफुरटा व्यावेकाम इत्यादि ।

एकोन ६ । पाघातादिजनित पीडा सोयान
अटकना अहमव्यङ्ग कडा थीर अनाड होना लर
वगैर ।

एहृष्टरा-भिरा ३० अ । खेचनके अहृष्ट सोभार
अटकना पीठको पैगोका पाचैप अर्द्ध वा अर्धसे वा
गरा अथु जल पीनेसे पाचैप पारम्भ । पाभिघाति
पीडा ।

मार्कुुरियास ६ । पोषका रूढ़ पोताम मत्र दुग्ध पोषणार्थ मूदा इसके मत्र उपदम (गर मी) का घाव । सूत्रपथादि फूल उठना ।

हिपार मन्फर ६ । सुक पोताम पोष खाव गण्डमाना धातु बार बार ज्यादे होना ।

पुराने प्रमेह को दवा ।

हाण्डाष्टोस ३ । तरुप वा पुराने प्रमेहम व्यवहाय्य है । बहुत दिनसे मत्रु मत्र वा पीले रूढ़का खाव इसका लक्षण है ।

नेट्राम १२ । पुराने प्रमेहम विषकारी नेत्रके बाद यह व्यवहार जाता है । पीले रूढ़का वा माफ खाव दरद रहित खाव ।

नाडट्टिक एमिड ६ । प्रमेहके मत्रु खावि नादि विद्यमान रहना । सूत्रपथम घाव । रक्तवर्ण वा पीषको तरह खाव ।

पल्मेटिना ६ । प्रमेहसहित वात पकगिरा घन माना रूढ़ वा पोताम मत्र रूढ़का खाव ।

मिपिया १२ । मत्रु दरदरहित खाव खाव का रूढ़ दूधकी तरह मत्रु वा पीले रूढ़का विष हगरी देनेके बाद खाव बन्द होकर वित्रगुड़ी वा गुग्गु मुटुकी तरह नादिर जाना ।

मार्कुरियास ६ । पीवका रङ्ग पीताभ मञ्ज
दुग्ध पीवस्त्रास मृदा इसके मङ्ग उपदग (गरमी)
का घाव । मूत्रपथादि फल उठना ।

हिपार सन्फर ६ । सफर पीताभ पीव
स्त्राव मण्डमाना धानु बार बार ग्याटे होना ।

पुराने प्रमेह को दृवा ।

हाण्ड्राष्टोम ३ । तरुण वा पुराने प्रमेहमें
व्यवहाय्य है । बहुत दिनोंसे प्रचुर मञ्ज वा पोले रङ्गका
स्त्राव इसके लक्षण है ।

नेट्राम १२ । पुराने प्रमेहमें पिचकारी लेनेके
बाद यह व्यवहार होता है । पीले रङ्गका वा साफ स्त्राव
दरद रहित स्त्राव ।

नाडूट्रिक एमिड ६ । प्रमेहके मङ्ग पाचि
नादि विद्यमान रहना । मूत्रपथमें घाव । रक्तवर्ण
वा पीवको तरङ्ग स्त्राव ।

पल्मेटिना ६ । प्रमेहजनित वात पकथिरा,
धन मादा रङ्ग वा पीताभ मञ्ज रङ्गका स्त्राव ।

सिपिया १२ । प्रचुर दरदरहित स्त्राव स्त्राव
का रङ्ग दूधको तरङ्ग सफे वा पोले रङ्गका, पिच
कारी देनेके बाद स्त्राव बन्द होकर विनगुडी वा गुणे
गुटीकी तरङ्ग बाहिर होना ।

स्वायत्ता रङ्ग रत्नाभ, - व्याज सामासि एति
इत्यादि ।

दूधको गरुड माटा - क रत्ना पित्रोसि
इत्यादि ।

पौत्रको गरुड क्राय नगाम इत्यादि ।

पोला रङ्ग क्राय व्यास द्विपार नदाम,
मातृदिक एमिड यत्रा ।

सञ्जुनाभ, व्यानाविम माक यत्रा ।

— — —

प्रसवादि । Labour etc)

प्रसव पीडाका मूलण । जिन प्रसव दरम
मलान मूमिड जाता है उमर पहिले मिय उमर
पानिने कामरका विस्तार कमता है इनके बाद मुवा
मउथी उमेवता जनिन बार बार पयाव करभकी चेहा
पेर अस्तिरता मचन तथा जाता है । अस्तिरता
बार बार मन मूत्र त्यामची इच्छा पानिमुसमे पया
रक पेर प्रीषाङ्गु पन्तर्गका निश्चयता पगेर पुत्र
मचन दिखारे तिया करत है ।

विभे विभेही अण्य तथा पमन मचन उरुगिण
होते है ।

ज्यासो १७ । स्राव काना और जमाट सुमके
मह परमे त्ररु ठरु ठहरके मान रक्तस्राव
स्रायशेष उन्नतना ।

दुपिकाक ६ । अल्पन नालवण रक्तस्राव
विश्रमिषा उमन इमका प्रज्ञान लक्षण ७ ।

स्यावाहुना । पनर रक्त नद मूत्र करक
मानरु समय समय पर क न नान उमके बाट
दरु महित शानित रु ३ ।

श्रायना । मरुत रक्त । काना धार जमाट
रक्त श्राव पर पर नख नलि उण ना शानित माह
का उमन क नम न म मरु रक्तस्रावक बाट
दृश्यनता ।

फल पडुनमे विलम्ब ।

यद्योपयुक्त त्ररु रहुनम मन्त न उमके बाट फले
पडुनमे विलम्ब जाता ह । नकिन उमम उम्ल धाकर
धावा फल एवा सुधा न कर इमन रक्तस्राव र धार यनक
तरुकी दुघटना जाती है ।

चिकित्सा ।

डाक्टर श्याम निगा है कि ~~पुस्तक~~ ट. वा. वा

मिथिल टेनेसे ही छून पड़ेगा । इसमें फल न पानेसे क्लिष्ट विलाडना वा स्यावाडना ६ दना होता है ।

प्रसव समय वा प्रसवके अन्तमें आक्षेप ।

(Puerperal convulsions)

प्रसवक दारुण समयमें वा प्रसवक अन्तमें अत्युच्चमान धातुका आघात वा यह मज्जा ही मज्जा है । यह बड़ा बड़ा रोग है । प्रसवकालमें यह अच्युत हानिसमन्तान् अथ अच्युत हानिक ही अथ विनष्ट होनका लक्षण है ।

चिकित्सा ।

१३ न इसमें अथ विलाडना कुण्डल हाथमा आदि दस १५ वा २० इसक दृष्टिवा दया है । डाक्टर इन्फेन्स वदत है । अथ वा मिथिलमिथिलिक अथार समय समयमें अथ पाया जाता है ।

विलाडना ६ । हाथ परमें अथ अथ अथ अथ । अथ अथ अथ अथ अथ अथ अथ ।

कुण्डल १३ । अथ अथ अथ अथ अथ अथ अथ । अथ अथ अथ अथ अथ अथ अथ ।

व्यामो १२ । छात्र काना और जमाट छमके मडू परमें दरद ठहर ठहरके लान रक्तस्राव छात्रवीय उत्तेजना ।

दुपिकाफ ६ । उज्ज्वल नामवर्ण रक्तस्राव विविधिया वमन इमका प्रधान लक्षण है ।

स्यावाडुना ६ । प्रचुर रक्त लह्ण मुख्य करक लानरह्ण समय समय पर काना लान । प्रसवक बाद दरद महित शीणित स्राव ।

चायना ६ । भयङ्कर रक्तस्राव काना और जमाट रक्त हाथ पैर और नत्र नीलापण तथा शीतल । माघे का घसना कानिर्म मां मां गश्द । रक्तस्रावक बाद दृश्यता ।

फूल पडनेमें विनश्य ।

यथापयुक्त दरद रहनेमें मन्तान प्रसवक बाद फूल पडनेमें विनश्य जाता है । लेकिन उसमें प्यस्त होकर धालो फूल पंथा खींची ल करे इसमें रक्तस्राव चार पर्जेक तरहकी दृष्टता होती है ।

चिकित्सा ।

डाक्टर च्यान निषा है कि एन्मेटिला वा

मिथिल देनेसे ही फल पड़ेगा । इससे फल न पडनेसे
कदाचित् वेलाडना वा स्याशाडना ६ देना
जाता है ।

प्रसव समय वा प्रसवके अन्तमें आक्षेप ।

(Puerperal convulsions)

प्रसवके दरदके समयमें वा प्रसवके अन्तमें सायु
प्रधान धातुकी क्रियाकी यह मज न हो सकती है । यह
कहा कडा बात है प्रसवकालमें यह उपस्थित होना
अस्मान्दार प्रसूति दानोंके ही प्रायः चिह्न होनेकी
संभावना है

चिकित्सा ।

१३ न इस मया वेलाडना कुप्रम हाथमा चापि
यस - न वग इमकी बटिया दशा है । डाक्टर
हमन कहते हैं - अन्त वा भिरिटुम भिरिटिके सकार
समय समयमें फल पाया जाता है ।

वेलाडना ६ । हाथ देरने खेचन यह धतना
वस्था । मुखमें फल उठना दरदके समय प्रायः ।

कुप्रम १२ । अक्षेप सहित धमन मुख ही करके
रहना जोठ धनुयके तरह टेटी जायगी ।

यनेक तरहकी पीडा लगी जाती है । इस लिये इसकी
मरण अनुयायी विक्रमा की जाती है ।

एकीन ६ । टहनता पाश्च्य करनेमें साथ ।

यमम ६ । महमा दुग्धचरण हल चण्य चय
गिह स्रावम ला रज वह दृधकी तरह जाना ।

मिकील ६ । चण्यल दुग्ध चतला साथ
पाण्यल काल से व

श्यामा ६ । ३६ व दलनित उदरामय घट
से दारु दलगुम ।

त्रायानिया १० । साथ हल हाकर माहम
दारु दारु म हमा कमी धमापता हना जाना है ।

८ उरु दलम पगार वन्द ।

९ ९ । दल दलम ५ दगार हल पाण्यल
कल

१० म १० क यमाव दलगा ।

११ ११ म ६ । दलगा हल हल दल दल म
दल

१२ १२ म ६ । दलगा से दलगा हल
कल । ३६ व दलगा दलगा ।

नक्ष्मभमिक्ता ६ । जनन चौर फट्जानेको
तरुह २२२ पैताव वल्ग तथा २२२का पैग ।

प्रसवके अन्तमें फोष्टरहता । प्रसवके बाद
कुछ गज काष्ठवह रहना विगोप जरुरी है । इसलिये
यह व्याभाविक जाना है । तब आठ दिन दफा वल्ग
रहनमें गुन्ने उत्पन्न जाने हैं चौर अनेक तरुहक रोग
जासकत हैं । इसलिये भाव लिखी दया दी जाती है ।
स्त्रिमिदिमको विनकारा २२२ वरा मर्दा है ।

प्रसवके अन्तमें उन्मत्तस्य । पत्तियेने ही जिन्
पटका नाव रहता है । उनको इसी समय उन्मत्तस्य
कथा करता है । मृ गजागारमें ज्यान् यो चौर ममाना
ख नमें यह कथा करता है । मावधान न जानमें
अभावक विविध रोग न मकर हैं ।

दया ।

पलमिटिभा ६ । इन्मत्त खाहर प हा मस्या
क नाव कवि ।

आदना १७ । अन्तल दृशकनाअनिम २२२ ।
मय मन् ६ मरु भोचन को चर वल्ग २२२ विवजना ।

प्रसवके पन्तमें लान्यज्वर (Milk Fever)

प्रसवक २। रात डाढ़ लानमें टरट घोर कडाइ जाता है। वामनमें काली उमकनी खर जाता घोर रसक दाढ़ लानमें रूध जाता है।

चिकित्सा। पहिले पायिका ६ टेनेस यह ख्याल नई जाना एकीनाइट ६ इमकी पच्छी दवा ६ मादम टरट रइनम वैलाडुना वा बाया समय समयमें देना होता ९।

लान्य वा दूधकी खान्यता। रात्र प्रसवोके लानमें कितना दूध बाहिर जाग उमकी खिरता मही ३। मन्थ रान १ निम लान पाव एह भर दूध बाहिर २। २ दूध खान। विमानशास्त्रोकी खर रान ६। मन्थ ३। ऊपर यह बात निभर करमा ८।

आ ५ दूध कम जान दूध दरमें होने वा दूध बैठ जानेसे दवा जाना चाहिये।

दवा।

पल्म ६। दूध खिलवसे होता वा खरमा बैठ जानेसे यह दवा ही तीन मात्रा देना होता ९।

बालकेरिया ३ । जमाया न गान पर
को पोडा स्ननकी पूर्णता जनाय किये न जानसे
इसकी दना होता २ ।

भय हेतुसे दूध बरुनम - उक्तान । क ५
जनित - ब्रामा १२ । गाक जनित दुग्ग ४ ।

डाक्टर ईस्पेन कहत ह- एमाकिट्टडा भी उमटा
दया है ।

घतिरिक्त स्ननकरण ।

(घाटे २१ हाना)

किसी किसी प्रसूताके स्ननन रतना ज्यादा दूध पैदा
होता है कि इसमें उम तकनाक जाती है । अजाम
आरीमें दूध भरनेमें स्नन भंग रहत है ।

घतिरिक्त स्नन भरतग गारोरिक और मानमिक
घनिट होनेकी सम्भावना रहती है ।

दया ।

असाड दूध भरना, — येनाड बालकेरिया
प्रायोनिया समय समयमें चायना या पनमटिना ६ ।

स्नन्य घरण जनित स्वास्याभद्र, दुर्घ
नता, क्षुधामान्दा, रातके यक्तमें पमीना, —
ब्रामकरिया, चायना मन्डर ६

नेत्रेभ्यो दण्डं वायुकोपमं तत्र चौरमायुमं तत्र
मलेरिया चवमं पुरानं प्रोक्ताको यद्दं वृत्तिया तत्राह ।

व्याधौनियाम् १२ । प्रोक्ता म्यानमं सूत्रं बधनको
तरुहं तत्रकोफं महितं काष्ठवृत्ता वा पतिनार, —रुहं
वमनं । प्रोक्ताको पावनतं भिक्षोपदायं दण्डं चौरं
कृत्वा ।

मनुस्मृत्यु ३ । प्रोक्ता कृत्वा कडा चौर दण्डने
मं दण्डं प्रोक्तामं सूत्रं बधनको तरुहं तत्रकोफं वातं
कडने चवनं फिरनमं रुहं पुराना वामारो ।

मियानोयम् चमरिक्षेनम् १ x । पुराने
चेवमं प्रोक्ताको कठिनता कृत्वा चौर क्वात् कान्तना
कृत्वा लक्षणमे प्रयोगं करनमं विगद्यं कृत्वा पाया जाता है ।
रक्तान्यता चरुवि वा पतिनार विद्यमानमं यद्दं क्वात्
देनमं वुराई कान्तको सम्भावना ३ ।

बधिरता वा कान्तं कम सुनना ।

(Deafness)

कान्तं प्रोक्ता कान्तं पीय मित्रता वरुहं रामं
परिधाम, क्वात् ठक्का ममं रुहं कान्तं वा मरुत
प्रवले गृहं सुननेमं दण्डं वाम देना होता है । यं नक

छाद्य विकृति वा पात्रति मत् पात्रश्च विकृति वमर
 चरन्तु कारण है सामान्य पात्रारहे मत्त उग्र दशा
 म्पात्रहे पाराम होने देखे जाते हैं ।



चिकित्सा

दुबलता वा छाद्यविकृति विकृति हेतु —

पद्माम १२ ।

हिम वा रागडा लगनावनित,—एकीन

माह एवम

शान्चरके वाद — एवम १२

विकारचरके वाद — एवम

म लक्ष्मण व उ नक्षे वाद — एवम १५ ।

गाडाम बटनस वधरता कम लक्ष्य
 मी,—एव १००

कानम ताजा लगना — म उ वा एवम ।

मुक्तेन एवम,— एवम चर चार सामको

कारणे व १ व २ देवत विद्युत पाउला काना व ।

रोज हवाय मय पार गनेने गुटिका नही आती है ।
 इसमें पार शरीरमें आ म होना है । गुटिकाएँ पहिले
 नाखून कडा और मुच पदकी तरह मुखवीना होकर
 उठते हैं — इसमें उच्च गुटिका चारों ओरसे आवे
 जातीं पार उनमें रस मयुय जाता है और मध्यस्थानमें
 नही रहता है । हड्डि वा मांसव दिन वह सब रस
 पेशमें परिष्कृत जाता है पार बायका नीचा खल उ था
 होजाता है ।

पाना वसन्त में और दृच्छा वसन्तमें
 प्रभेद । पत्रवसन्त और दृच्छा वसन्तकी गुटिका
 पनेक समय एक तरहकी जाने पर भी इनमें भेद है ।
 वसन्तकी गुटिकाके बीच रसमयके समय निष्ठता
 रहती है उन्वसन्तमें वह नही रहती वसन्तकी गुटि
 कापीका पहिले पानामें टवानमें उनमें मरछीका
 तरह उठा वलुका वास्तव अनुभव जाता है पत्र
 वसन्तमें वह नही जाता । वसन्तका गुटिकापीके एक
 छर पीछे निश्चलन न सुषन पर दाग रहता है उस
 वसन्तमें वीजा दाग नही रहता ।

कमुच वसन्त जानेमें उपर तिस नखकी एक
 रता देखी जाती है । स्वरजा ल्याटे प्लाप रोर्नड
 शरीरमें दुग्ध वन्धि खर, ल्याटे होकर पादिर तक
 की सकता है ।

पृथु अगहने दूमरा अगह दरद हट आता है । जियों को पीछा पयराइने हृदि ।

रसटक्म ६ । पीडित म्यान कडा होना विनामके समय दरदका बढ़ना कमानत दिग्ने होसने में वदाम ।

कुम्भधिकाम ६ । रसटक्मके बाद यह पद दार किया जाता है । पियाबसो कमी थी मिचलना होत ।

पुगतन वातको दश ।

रसटक्म ३० । पीडित म्यान कडा और दानद हसह काने दुखलता ।

मन्फर ३०श । पुगता वात कोनिह दाय । मयानने पुत्रनाहट पन्ह दाय ।

कृष्टिकाम ३०श । शय मन्फरका ताव कडा न मरु मन्फरका कटारना वरमने दया बढ़ना ।

कृष्टिकाम ३१ । रसटक्मन पाटन न काने में रसके दया काने जाता है ।

वयान्तेरिदा ३०श । काने पडा होकर काने वरमने वन । कथिनें पटपट रस दोर दीने प काने दपुर दलना ।

निरुद्धि है । अन्तर्गत चतुर्भुज प्रायां चाण्डिका वा रम
 निरुद्धिमा मानिग करना वरा नहीं है ।

रोग पुरातन भाउयुक्त हानन उण्यप्रधान लगने
 करना और मध्यमा कुनिम वा गरम वल चोटना
 जाता उचित है । पुटिकर और मउपान भाउत
 रना चाण्डिय ।

तरुण शतको दया ।

एकीन ४ । एवमन्तर निरुद्धिमा रर
 रातम समझ रर मभियुक्ता कवना और मानवव
 वयेर मज्जम रोगको उचन व ननम वर प्रणा से
 धेनाउ है । मायम वर व न मूख मरमान
 चनिना । चाक्रान्त मभिका पयल नान हाना ।

त्रायोनिया ६ । सूई वधनके तरु दूर
 मानपयोच दूर एडितनान विरुद्धिमा काना विनन
 होकरनेम लरुका वदना , मेडिन दूरम विननम बाध
 होना । अर मायेवा दूर आणवपना पये ना हाना ।

माकुमुल ६ । मभिलन चाक्रान्त हाने एव
 एने न सुनेने मो येडावा कउमर न हाना । गरम
 दूरवा वरना । अन्तर्गत मीय ।

एवमेडिका १२ । अरुणमीन लरु वरान्

उपद्रव पारंकी विहृति प्रमेहरोग,—

बाबू मेडि नाइकोप सनफ हिगार ।

मैड पीडाञ्जनित,—क्रिनेटिस गुमा माकु ।

उप्यतासि उपगम,—रसटल्ल कटिकाम
नाइकोप माक सक्कर ।

ठगडा प्रयोगमे उपगम,—पननेटिना ।

ब्रण तथा स्फोटक ।

(Boils and Abscesses)

लक्षण । छोटे छोटे स्फोटकका ब्रण पौर बडे होनेसे स्फोटक कहते हैं । पौर तन्तु वा यन्त्रन पौर पेदा होनेसे उसे विन्धि कहा जाता है । पहिले पनाइ चारकता होकर दाता बह बैठ जाता पथवा पीठ हाइर मुष होता है । कभी पायडी पाप फटकर पीठ बाहिर हा जाता है । कभी वाकूमे मुष कर देना होता है ।

कारण । शोर कहते है ये सङ्के होवने पेदा होने है । छोडो, दोहडाकने चामके समय इनकी शक्ति न्दादे देखी जाती है ।

चिकित्सा । पहिले मासु होशानेसे चीनस दम की पडे पौर पशने का उपक्रम होनेस पुलटिस देना

उपद्रव पारेको विकृति प्रमेहयोग, —

बाध म्रि, मादकोष सम्पद विचार ।

मेह पीडाजनित — श्लिमेटिस दुग्ग माकु ।

उप्यतामि उपशाम, — रन्टरा कृदिकाम
माईकाप माउ मकर ।

ठण्डा प्रयोगमे उपशाम, — उपमदिका ।

ब्रह्म तथा स्फोटक ।

(Bools and Abscesses)

मधुस्य । छोटे छोटे स्फोटक ब्रह्म ५५ बर
जासमे स्फोटक कहत है । कोर मनु वा एम्पेरे पाह
देला जासमे उमे विन्धि कहा जाना है । एहिमे एगह
एगहला जाकर टाला बर बठ जाना एववा पाव जाकर
मुष होमा है । एभा एववाँ एव एववा ९ ब बाहिर
जा जाना है । एभा एववाँ मुष कर देला होला है ।

कारण । कोर एवने है ऐ मरुडे दोवम एहा
हने है । कोरो, एववा बने ए मरु कसय एववा
एववाँ एववाँ जाना है ।

विज्ञाना । एहिमे एववाँ होजायेग होमय एव
बे एगे कोर एवने वा एववाँ एववाँ दुग्गटिस देला

दुग्ध पीव होने पर इसे दनेसे नागूर खम^० चाराम
हा जाता है ।

मनुस्मृत ३० । बारम्बार ब्रध वा स्फाटक
होना शरीरके मधिमज्जा दाघ समाधनके निष्ठे शेष
पेषमें २।१ मात्रा देनी उचित है ।

शैवनशास्त्रमें मुखमें ब्रध होनेमें क्षुत्पचवानाको
मात्रधान होना उचित है । पनेक समय इन्द्रिय दाघमें
दि ब्रध मुखमें होके मुखकी शी विगाड देते हैं । इस
निष्ठे काश्चमेनि १२ स्वास्त्रिबोम ३× फस्करिक एमिड
१० वगर बटिया दवा है । स्वानडेरियाके सहार भी
फन पाया जाता है ।

मधिम चिकित्सा ।

पधिक ब्रध होते रहनेसे —पाणिका मरु
मनकर ।

ब्रध होनेको प्रवणता वा स्वभाव होनेसे,—
पाणिका, तारकोव मनकर (उषक्रम) ।

बडा फोडा होनेसे,—द्विपार छोटेसभ नार
काव सारसि ।

मस्तकके ऊपर फोडा,—क्यापके नाइद्रिव
वकिड वगैर ।

मनकघूर्जन (मायेका घूमना) ।

(Vertigo)

एकपरके निचे मादा घूम जाता (सिरमें लहर जाता) है रामो मझकता है कि एह में दिहना दोर बाहिर वस्तु घूमता हूँ बोध होती है । विविध बोधा व महदरूपके यह प्रभाव होता है ।

कारण । पाचको पीडा कानके भागको पीडा पाचामेदिह दोर पाचविह विहति तथा बुढापात्रमिह बोधा वरु कारवत इतिह दहन दोर मूठपदिहा लडामे भे यह लपक होता है । मलिह पीडाके बाद दोर मध कुजाहल, मांजा वनेर खिन करमेम ५ यह प्रभाव हो सडना है ।

विद्विषा ।

मसिष्कमे रक्षाधिरुप्रमित रोगने,—

लडोम ५ हा रेकहना ५ मझमिहा ५ लडारिनु दमम ५ एरहुन हूपा करना है ।

परिवाह विहतिप्रमित पीडामे,—मझम दमम ५ ।

एधिरु दोर रक्त विहकनेमे, दुर्धनता-प्रमित पीडामे,—बादना. वरुण ।

उत्पन्न होता है । एक समयमें एक वा कई जगहमें परिच्यार होता है ।

कारण । एक तरहके जोरानु डिप्लायाहिरररर के हमके उत्पत्ति होती है । अपरिष्कार स्थान गत्य दुर्गन्ध मज वगर हमके उत्पन्नकारण है ।

निदान । सुप्तनेमें समझना होनेसे मस्तिष्क शाब्दिक चस्मिमण्डन वगैर साकान्त होते है । मस्तिष्कके दूसरे पदाय वगैर को विकृति शाब्दिकता टार (Blood glutinous) हड्डोमें दारुको पृथक्ता चस्मिमण्डनकी साकान्ति पैदा होती है । चायोवण क्रियाका पचाघात पैदा होता है ।

प्रकार भेद । गोन्वीज एव होनेमें भी यह कर एक प्रकारसे विभक्त रेखा जाता है —(१) व्यरोनिक (चयि हृदि यम्) । (२) चयि विहृदि गृन्थ (सिपटि मिन्डि लामोनिक् वा इन्टिटेनाल नैक्साहटौक् वीर करिमान) ।

लक्षण । चयिने सहसा शीत करके पत्र चिर पोरा वीर वर नैव मार नाडी द्रत भीममाने वीर कष्यकबुद्ध । श्वास पचाघातकी गभीरता नहीं रहती वीर वीर एव पत्रहमें पत्र दैठन वा मरोड । छाद्य मण्डनकी विशुद्धता । पनाय, मन्दाहुता वगैर वा

कुचक्रोक्त यन्त्रियों का क्रमनाः स्थान विशेषमें प्रति
वार रक्षातिमार भेद घमन । कुमकुम प्रदाह यगैर ।

व्युत्थानिक प्रकारकी पीडामें कुचक्रो यगन
जनमिनको यन्त्रिमं दरद घोर जनन रहता है । पहिले
क्रमना ज्यादा नहीं रहता, लेकिन दरदको जननम
रोगो यन्त्रिर होता है ।

व्युत्थानिक प्रकारका घरन कुमकुम प्रदाहकी
भाति लक्षण प्रकार होते हैं ।

मेरिब्रान प्रकारका होनेसे मन्त्रिक ध्वरक
महय लक्षण ज्ञान दृष्टा करता है ।

शौद्धिक प्रकार का होनेसे पहिलेसे ही
उत्तरमें जलन घमन पेट क्रमना वगैर लक्षण दृष्टे
जाते हैं ।

श्यायित्व । मधराघर एकसे चारि दिन
प्रकार मन्त्रे क्त्वाचित् ज्यादा दिन दृष्टा करता है ।

भाविष्णु । प्राय माहात्मिक क्रम प्रमाण
करता है । व्युत्थानिकको यथया व्युत्थानिक माहा
त्मिक है ।

प्रतिषेधक उपाय । चूनाका जल सूर्य
दिरण परिष्कार दरिद्रता, विद्वेध वायु मिनन

व्यापटमिया १ x । पवन ज्वर दुग्ध
तिमार चण्ड प्रभाप तन्दावता शरीरमें दरद ।

कम्फरम ६ । श्मोनिज प्रकारमें कुमकमजा
तकमन ।

पाडुराजिनम । मलाग त्रिदि विपात कर ।
इसमें ताप खूब कम चया करता है । डाक्टर ललन
कुमम चनेक ल्पामें पाया है ।

शामिनिक ६ । पवन ज्वर प धरता घाम,
चंद भननावला वादकाद करना जनन मल नाही
छाव थीर सुन दया न ललनम प्रयुक्त है

सेमिन १० । कुमक ३ वम बना है । डाक्टर
राय कहते हैं — इसका प्रोत ५-६% थीर चागीम्यता
गुण लभविगपम लायते हैं

क्रोठलम थीर श्मोनिमिम ६ । डाक्टर मर
कारन इन्ड रकस्याव ललनमें प्रधान रवा कहा है ।
इस प्रकारके कुमम एक लावहाय्य है । मलाग चने
तक प्रवाउ दुग्धवता शिरोवेडा पिलनमन त्रिपाथी
स्मोनि चण्ड मनुई थीर कुमकुममें रकस्याव ।

मेजा वा शोषण ६ । लक्ष्यता थीर कुदुविण्ड
की त्रिपा ललनहो ललद रक्यावता रक्यावें यह रवा

है । घबुर पसोना निकलना और आंखावरोध लक्ष्य हममें आते । डाक्टर कानि इसके पचपातो है ।

रसटक्के ह । घबुर ल्वर सभाहमें टरद । घनाप मफिका पत्रिका प्रदाह उदरामय तन्द्रानुता लक्ष्य रहता है । डाक्टर मजुमदार इसके पचपातो है ।

इस मिशय माफुहर ध्याडियागा काष्मेवि नेहाम वगैर समय समयमें उपदोगी होते है ।

क्रम । इस रोगमें निघ क्रमके सहारे फन पाया गदा है ।

माथेका टरद (गिरपीडा) ।

(Headache)

विभिन्न तरह के पुराने रोगोंमें गिरपीडा लक्ष्य विद्यमान रहता है । इस लिय यह अतन्त्र रोग नहीं कहा जाता ।

कारण । नीचे लिखे कारणोंमें गिरपीडा हुआ करती है ।

(क) रसायना वात कथमूत्र सैलेरिया उपदम मूत्रधारजनित पीडा ।

(घ) शीघ हरा तमाकुही विरहिटाजनित पीडा ।

पीना वगैर हेतुमें इस पीडाको उत्पत्ति होती है ।
पाघातादि पड़ना वा पल्लव परियमसे भी पीडा
हूषा करतो है ।

आयुको दौर्बल्यजनित पीडा । रक्ता
क्षतावयवमें वा मूत्रागत वायुरोगसे इसी तरह की गिर
पीडा देखी जाती है ।

यान्त्रिक गिरपीडा । मस्तिष्कमें चञ्चुन,
मस्तिष्क प्रदाह वगैर कारणसे यह होती है ।

एककपालमें मायका दरद (माइयण) ।
इसमें मस्तकके एक तरफ सामयिक और वमनोद्देक
वा वमन मयुक्त दरद होता है ।

चिकित्सादि सहकारी उपाय । सब तरह
की उत्तेजना परिस्थान चाहाएदि विषयमें भावधान
सब और मांस त्याग करना उचित है । अधिक तैलाह
वा गुह्यक वस्तुएं भोजन करना मना है ।

खर न रहनेसे ठण्डे कनधे नहाना और परिमित
आयाम विशेष हितकर है ।

पथजनित गिरपीडामें नमक वा सोरा वा हर
वमन करनेसे कसद पीडा की शान्ति होती है । पाठ
शिक कारणसे रोग होनेसे हृत्पिरभावसे होना पश्चा
है । शिरजा कम घंटी करके बटाना, शिरमें शीतल

नदरे कण्ठो न हने पर-ब्रह्मनिष्ठा ३० वास्तु
 हेतुनि निरेष्टान् एतन्नाम के प्रथम प्राय है । इन
 वेदके मन्त्र ३० विद्विदा ३० मन्त्र मन्त्र पर पादक
 प्रथम प्राय होता है ।

वात वा पानवात प्रनित गिर पोडन्ति ।

नाश्नन् वा दन्तान् नश्यन् दन्तान् वास्तु
 हेतुनि हेतु निरेष्टके कदापि दन्तान् नश्यन्
 दन्तान् है ।

तब मानिस करना पच्छी कड़ीसे धीरे धीरे केस भाड़ना
शुदा नहीं है । सरसत वा मिमरौका लन पच्छा है ।

भायेके दरद का द्वा ।

(डाकर त्वारकी राय ।)

शिरपोडा । मदी बन्द होकर मशुष
आरबोध होना लमके मइ नाक बन्द बोध
। ६ । पाखक ऊपर फटनेकी

बन्द भाकम गाट पच्छा पडती रहनेके समय —

। १२ । मदी धरबोधजनित शिरपोडामे एकीन

का वैनाड ६ पच्छा त्वा ह ।

रक्षाधिक्यजनित शिरपोडा । ज्यादा पछर

दरद, त्रैव मुख सात वगर लक्षणमे एकीन धोर
धिमैडना, समय समय पर भाया वा लक्षणकी जरूरत
होती है ।

पाक्षागयिक शिरपोडा । बमनोत्रेच लक्षण

महित शिरपोडामे इपिकाक ६ व चारथ करक
पम्प वा एष्टिकुड है कर फल पाया है ।

मद्य पानजनित पोडामे काख्भेलि वा नकम

भमिका ३० ग । खोठबहता रहनेव लक्षणभमिका

माधिका दर दाहिनी तरफ आटे रौपनी और दूध
 एकत्र माया गरम पैर ठण्डा दरदका पावेग कइसा
 घाना और सहसा जाना । दिन घटनेके सत्र सत्र
 हदि ।

वायोनीया ३० ग । कसुष कगतके सगाय
 ऐकेकी तरफ दिरपोडाका विस्तार, बननेसे हदि
 माधेके दरदके घाय नाकसे सङ्ग गिरना पक्षेनाके
 समय सहसा घान करनेसे दिरपोडाको सत्यति ।
 लक्षादिक्र सामशानिक्र वा रक्षाधिक्कप्रमित पीडामें
 व्यवहार्य है । साथे कसने दिरपोडाके सहित
 समनोद्रेक ।

घायना १२ । रम रक्षघावजनित रक्षा
 घना राम की दिरपोडा मल्लकने दग् दग् करके दरद
 मल्लिकने पाषाण मासिकी तरफ दरद अतिरिक्त
 इन्द्रिय परिपालन वा हृत्विम भैद्युनक परिपालने
 दिरपोडा ।

खेनुस ३० ग । पाषणघाता माधिका दरद
 पवाल मल्लकने दिरपोडा पाषण काके कसुष तरफ
 काके नैव पदम पाकाल घाना, माया घरना
 माने रोगे कुछ मौ नहो देखने पाता है । कालने
 दूध ।

शारीरिक परिश्रम, — क्याण्डके, फस त्याज्य

सिद्ध ।

ठण्डाजनित, — एकोन वेनाड वायो वगेर ।

मस्तकमें घाघात, — पाण्डिका रसटक मार

क्यूटा ।

मानसिक श्रावण, — क्याभो, जेलस इम्मे

सिया ।

रात्रि जागरण — वाया नक्षत्र सुलफर ।

समय ।

सन्ध्याकालमें टरट्ट — पनम सुलफ ।

रात्रिकालमें — वनाड पनम त्याज्यसिद्ध ।

प्रात कालमें — वायो वायना नक्षत्र सुलफर ।

दवाका लक्षण ।

एकोनाइट ६ । रक्तधिक्यजनित गिरपोडा
सन्तनयुक्त माधिका दरद, मानो मस्तिष्क उष्ण जनस
घान्दोलित होता है । रोगनी घोर शब्दसे हृदि
घन्धकारमें स्थिरभावसे सोनेपर उपयम ।

वीलाडुना ३० । मस्तकमें रक्तप्रधान उमके
सहित सन्धास रोग होनेका उपक्रम दप दप करके

माघेका दरद दाग्नी तरफ चादे रीयनी दौर इण
 चमद माया मरम पैर ठप्पा दरदका पावेग सइसा
 घाना दौर सइसा जाना । दिन चदनके सइ सइ
 हइ ।

त्रायोनीया ३०३ । सद्युष खगानसे सगाय
 टीकेकी तरफ मिरपोडाका विहार चमनेसे हइ
 माघेके दरदके माय नाइसे सइ गिरना घसोनाके
 समय सइसा घान करेसे मिरपोडाकी व्यत्ति ।
 पाकायदिक चामशक्तिइ वा रक्षाधिकजनित पीडामें
 अशुद्ध्य है । चाधे खगालन मिरपोडाके सहित
 दमनोद्रेक ।

चायना १२ । रघ रक्षाशक्तित रक्षा
 मता रोग को मिरपोडा मस्तकमें दण दण करके दरद
 मन्त्रिकमें चाघाल प्राप्तिका तरफ दरद अतिरिक्त
 इन्द्रिय परिपालन वा हृदय मधुनइ परिचामसे
 मिरपोडा ।

जेसस ३ ३ । चउकाली माघेका दरद
 पषाम् मस्तकमें मिरपोडा चारु करके सद्युष तरफ
 चाके नेत्र पदत पाकाय होना, माया घरना
 मागे रोगे कुछ भी नहीं देखने पाता है । खानने
 मइ ।

माथेका दरद दाहिनी तरफ ज्यादा, रोगनी और शब्द समझ माया गरम पैर ठण्डा, दरदका भावना सहसा जाना और सहसा जाना । दिन खटनेके सङ्ग सङ्ग हृदि ।

ब्रायोनीया ३ श । सन्धुष कपालसे लगाय पीछेकी तरफ गिरपीडाका विस्तार बननेसे हृदि भाँसेके दरदके साथ नाकसे सङ्ग गिरना पसोनाई समय सहसा घान करनेसे गिरपीडाको उत्पत्ति । पाकामयिक शामशतिक या रक्षाधिस्यजनित पीडामें व्यवहार्य है । पाँचे कपालमें गिरपीडामें सहित बमनोद्वेष ।

चीयना १२ । रस रक्षाधिस्यजनित रक्षा श्रुता रोग का गिरपीडा मस्त्रकमें दप दप करके दरद मस्त्रिकमें पाषाण प्राणिको बरद दरद प्रतिरिक्त इन्द्रिय परिचालन वा छत्रिम मैथुनके परिपाममें गिरपीडा ।

जेनम ३.श । राधकपाली माथेका दरद यथात् मस्त्रकमें गिरपीडा धारण करके सन्धुष तरफ भाँसे नैत्र पयस्त पाकाल होना, माया धरना मानो रोगी कुछ भी नहीं देखने पाता है । खानने शब्द ।

शांति-संघ संस्थापक

१९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

१९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

१९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

सुभाष चन्द्र बोस, १९४०

मस्तिष्कमें मानो कांटा बोधे देना है, मानो मस्तिष्क
 छट खादना ऐसा बोध मस्तिष्कमें घोट मग्नेही
 तरह दरद मग्ने वठनेसे ख्याते भीष्मके चरने
 बटना खादि खाने वा चवनत होने वा नेत्र मग्नामने
 हरि । खादबहना ह्म मंयुनशाखियोंकी दिरपीडा ।

पल्मेटिना ३०३ । अगस्त्य खादविह रोर
 वादमान वा पात्रामविह दिरपीडा मग्नुष कानमें
 रोर नेत्रह मग्नुष दरद मग्नाके समय हरि निम
 पमशह कि ई मग्ना काय नम पात्रमें दरद बट खाद
 हरि । व दुमें वा मादमें वरु बाधनेह चर्या रहे ।

सिपिदा ३०३ । खादविह रोर अगस्त्य
 दिरपीडा एव तत्र कानमें दरद वात्रमें दरद दर
 वात्र दरद वात्रविह दिरपीडा । विरनिदा रोर
 वमन वात्रदर हरित दिरपीडा ।

न्यादुर्जेनिया ३०३ । एव मग्नेर मादहा
 दरद दरद वात्र विह मग्नेर माद वा माद वात्र ।
 वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र
 दिरपीडा दिरपीडा दिरपीडा दिरपीडा दिरपीडा ।

मग्नुष ३०३ । मग्नुष मग्नुष मग्नुष
 मग्नुष मग्नुष मग्नुष मग्नुष मग्नुष मग्नुष
 मग्नुष मग्नुष मग्नुष मग्नुष मग्नुष मग्नुष

इन्द्रजयन् ६ । मन्मथ मस्तकमे भयानक गुह्य
 वा । रक्षाधिकान्त्रित गिरघोडा घोरकानमे माथ
 का ११८ गुह्य होकर बिलकुल घोर समय तक रहना
 घोर गुह्य है उन्मादक मनु बना ।

दुष्प्रसिया ३० । त्रिप्रिया वा गुह्य वायुत्र
 घोर घोरित्त गिरघोडा नदमे वा नाकके मुखमे
 ११९ का ज्ञानतो एक कपालमे माथका दरद घमती
 एक मन्थ इ मस्तकमे गिरा दरद कि रोगी उबल पीछे
 वा नाक मस्तक घबरात करता है ।

घाट्टिस ३१ । मानसिक परिग्रम त्रित
 म मन्थ गिरघोडा उभर मनु घिलदुक्त मन्थ घटमे
 १२०

न्याकुसिम ३०३ । यय मन्थ कालको गिर
 १२१ मन्थ गिरघोडा घोर मनु उबलमे । उभे
 मन्थ मन्थ १२२ ।

नट्टामय्या १० । ललक मन्थकाल गिर
 १२३ मन्थ गिरघोडा मन्थकाल कालमे ज्ञान
 मन्थकाल त्रित गिरघोडा मन्थकाल मन्थकाल १२४ ।

मन्थम मन्थ ३०३ । रक्षाधिक घोर घोर
 १२५ गिरघोडा मन्थकाल मन्थकाल मन्थकाल १२६ ।

मस्तिष्कने मानो काटा बीधे देता है मानो कौन
 फट लायगा ऐसा बोध मस्तिष्कने दो कौन
 तरह दरद, रंभरे उठनेमे ल्यादे कौन
 दटना धादिर जाने वा पवनत होये कौन
 हदि । काठबहता इना मैयुनडादिदेई कौन

पल्लुमिटिला ३०३ ।

वामनाग वा पाशाप्रविश दिरनेकु कहुन
 दोर नेत्रहे छर दरद मन्दाके कहुन
 पाशाड डिड माया वाद कहुन
 शहिरी क दुने वा मायेने कहुन

मिपिया ३०४ ।

मिरले डा एक मरु कानने कहुन
 करक दाद कानवर्तित्व कहुन
 बसन कानवर कहित मिपिये

न्यादुखेनिया ३०५ - - - - - ४३

दरद मरु हाडर मि कहुन
 दादी धारक क मरु कहुन
 दिरनेक विना कहुन

नन्दा ३०६ - - - - - विदेप पाददा

नन्दापुत्रने रण कहुन
 नन्दापुत्र मिदक कहुन

शालग्रामित गिरघोड़ा । मधेरेमे गुरु होकर दिन बदने
न मनु हो मनु कमका बदना रातभ भी दप दप करके
कर, सामयिक दण्ड ।



मसुमे गाव । (Aphthæ)

गुण्डे मतेरमे भीममे शाले वायमे मादे मादे
पान दुपा करन से सामान्य प्रकारको प हा पय
व्यवहारमे लम्बा नगने पोर पर गरम जलमे दुमकी
क्याल दुपा करन से

गण्डे खरले म ३० न ३० न ३० से इससे बीच
प नाम बचने न न न न पोर गले लरुका
मख है इसमे लुके घा गीध वचन जलमे (व्याघ्रनाम)
हा करान है । लभने । याममे दुममे बीच माल कुल
अ न है ।

मसुमे गाव । चिकित्सा । दूरा मोमका जलमे
कामका ३० से ३० न ३० न ३० वा मय एकत्र करके
कामका ३० से ३० न ३० न ३० वा मसुमे ३० न ३०
वद प ३० से ३० न ३० न ३० वा मसुमे ३० न ३०
क ३० से

दवा ।

नक्सभमिका ६ । मसूडे का फूलना, दरद मुषमें मय निरुमना बीषवह नारसाव ।

मार्कुरियास ६ । मुषमें मार गिरना पेटकी दामारी टांखपुस घावमें पच्छा दात हिलना पिच्छा म्पेत पीर कडापन वगर लषधने दिदा जाता है ।

एमिड नाइट्रिक ६ । मुषमें घाव मसूडा मकेट पीर फूना दुषा तथा उमसे लह गिरना मुषमें दुग्ध पारकी विजति रहनी ।

काञ्च भेत्ति १२ । मय घाव पच्छका दोष पार की विजति । पार्सेनिकसे फायदा न होनेसे इससे पत्र पाया जाता है ।

पार्सेनिक १२ । मुषमें टांख होना जग्रा मय पल्लव दुर्धनता । जोमके जिभारके घाव घावमें बहुत क्षनन होनी ।

सल्फर ३ । यदि किसी दवासे फायदा होकर पीर कम न हो या देहमें गुत्रलौ लसडाका दोष रहे तो बीधने इसकी एक मात्रा देनेसे विशेष फायदा दीघता है ।

वीराक्स ६ । पासक पीर बटोकी पीड़ा मुष

दवा ।

नक्सभमिका ६ । मूत्रों का फूलना दरद, मुँहसे रक्त निकलना बोलबोल सारसाय ।

मार्कुरियास ६ । मुखमें नार गिरना पटकी बामारो टगभयुक्त घावमें पच्छा दात दिटना निह्ना स्त्रीत और कडापन वगैर सक्षममें दिया जाता है ।

एसिड नाइट्रिक ६ । मुखमें घाव मधुदा मज्जेद और फूना हुआ तथा लक्ष्में लड़ गिरना मुखमें दुग्ध पारशी विकृति रहनी ।

काञ्च भेति १२ । मडा घाव पसुका दोष पारे की विकृति । पार्सेनिकसे फायदा न होनेसे इससे फल पाया जाता है ।

पार्सेनिक १२ । मुखमें दुग्ध होना टग्रा मय पत्यन्त दुग्धनता । लोभडे जिनारडे घाव , घावमें बहुत चलन होनी ।

मल्फर ३० । यदि किसी दवासे फायदा होकर और कम न हो या देहमें सुत्रली पसुडाका दोष रहे तो बीरने रखी एक मात्रा देनेसे विशेष फायदा दीयता है ।

थोराक्स ६ । बालक और बटीडी पैडा मुख

वातजनित गिरपोड़ा । सवेरेसे गरु होकर दिन घटने के मझु हो सझु उमका बढ़ना, रातमें भी दप दप् करक दरद, सामयिक दरद ।

मुखमें घाव । (Aphthæ)

मुखक भोतरमं जोभमं दातके पाखमं सादे सादे घाव दुषा करत है । सामान्य प्रकारको पोड़ा अथ व्यवहारमें ठण्डा लगनं और पट गरम होनेसे इसकी उत्पत्ति दुषा करना ॐ ।

गैंग्र चक्ष्माम एह ल्याल लाना है । इसके बीष पीताम वषन घाव क रन है । और एक तरह का मख है उसमें उरु घाव शीघ्र वषन होनेसे (प्यापिषाम) हा जाता है । इसमें निम्बाममं दुग्न्ध और गाम कूल जाते हैं ।

सहकारि चिकित्सा । युवा लीगोको हानम घुहागाको क्षा और म्बिनिरिन वा मधु एकत्र करक लगाना लोना ॐ । लेकिन चानरु वा गिगुर्षाक पचमं यह चण्डा मन्ने है उनक घावमें मीड़ो का दूध देना चण्डा है ।

दवा ।

नक्षत्रभङ्गिका ६ । मधुके का पुत्रता दरद
मुचमे लम्ब निम्बका बीछरर मारसाव ।

मार्कुरियाम ६ । मुचमे मार निरना पेटकी
ह मारी दुग्धदुग्ध घावमें दण्डा दात दिमना विद्धा
प्योत पीर कनादन वगर लघवमें दिदा जाता है ।

एमिट नाइट्रिक ६ । मुचमें घाव मएडा
मघेट पीर पुना पुदा मदा लमसे मङ्ग दिरना मुचमें
दुग्ध घावमें विरति रहती ।

काल्म भङ्गि १२ । मडा घाव दण्डा पीर
घाव की विरति । घावमेंनिम्बसे घावदा न हीनिम हलम
कल दादा जाता है ।

घामेनिक १० । मचमें दुग्ध काल दण्डा
मद दण्डा दुग्धमना । घावके किनारेके घाव घावमें
दुग्ध लमसे रहें ।

सन्फर २० । टटि बिधी दवासे घावना
दण्डा पीर लम न हा दा देरन लुग्ध कल दण्डा पीर
रह लो देरने रहती एक मात्रा देनेसे विरति घावदा
है ।

बोराकुम ६ । दण्डा पीर दण्डा देदा मुच

वातजनित गिरपोड़ा । सुबेरेसे मरु होकर दिन घटने के मरु हो मरु उसका बढ़ना रातमें भी दप दप करके दरद, सामयिक दरद ।

मुखमें घाव । (Aphthæ)

मुखक भोतरमें जोमम दांतके पाखमें सादे साट घाव हुआ करत हैं । सामान्य प्रकारको पोड़ा पच्य प्यवहारमें ठण्ठा लगन और पेट गरम होनेसे इसको उत्पत्ति हुआ करता है ।

गैंग्रन पच्यव्याम यह न्याये होता है । इसके बीच पीताम वचन घाव लागत हैं । और एक तरह का मज्जा है उससे उच्च घाव मोत्र पचन होनेसे (प्यापियाम) जा जाता है । इससे निर्याममें दुग्न्ध और गाम फूल जाते हैं ।

सहकारो चिकित्सा । युवा सीमोंको हीनन पुहागाकी रू + धरे ग्लिमिगिन वा मधु एकत्र करके ममाना होना है । अक्षिण बालक वा मिश्रुपीक पचम यह पन्था नहीं है । अन्त घावमें मीठी का दूध दना चम्पू है ।

दवा ।

नक्सभमिका ६ । मण्डे का फूलना दरद मुखसे गन्ध निकलना खोडपद मारसाध ।

मार्कुरियास ६ । मुखसे मार गिरना पटकी बामारो दुग्धदुग्ध धारने पच्छा दात दिन्ना जिद्धा स्त्रीत पीर कडापन वगर नक्षपने दिया जाता है ।

एनिड नाइट्रिक ६ । मुखमें घाव मण्डा मण्डे पीर फूना हुआ तथा उससे नङ्ग गिरना मुखमें दुग्ध धारकी विज्ञति रहनी ।

क्वाव् मेजि १२ । सडा घाव पच्छा दोष धारे की विज्ञति । धार्मेनिकसे फायदा न होनेसे इससे फस पाया जाता है ।

धार्मेनिक १२ । मुखमें दुग्ध होना उदरा मय पल्पस दुग्धनता । बीमके किनारेके घाव धारमें रहत प्रनन है नो ।

मल्फर ३० । यदि किसी दशासे फायदा होकर पीर कम न हो वा देहनं सुधनी घसडाया दोष रहे तो बीवने इच्छी एक मात्रा देनेसे विशेष फायदा दीपना है ।

वीराक्स ६ । बालक पीर बटोकी पैडा मुख

१ म विपश्यन्तु । यथा चान वा रोग कुष्ठ मय
ये चक्षुषा नमो गायन न च वा मरुता ।

आशिका एव एव विपश्यन्तु वा विपश्यन्तु
चक्षुषा नमो गायन न च वा मरुता ।

११५ वा विपश्यन्तु वा विपश्यन्तु
चक्षुषा नमो गायन न च वा मरुता ।
११५ वा विपश्यन्तु वा विपश्यन्तु
चक्षुषा नमो गायन न च वा मरुता ।

११५

वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष

वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष

वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष

वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष
वृत्तमिच्छा ३ वा २ ग । मानविष

ठन कर उड़तो है और उम निचे छट निगनने और
धाम लेनेमे क्रम जाताके बोध घडकना बाध ।

क्यालक्षेत्रिया खार्ड ३ श । येका प्रधान
धातु स्तुकाय रस्य रोग योडा शीत सुवनेमे महीं
होना धातु अधिक् रजसाय प्रदर रोग मनाविषाद
दिनके बोध एनेह द्वार रोगक्रमण अनिद्रा वगैर
मददमे दगा होता है ।

नक्षत्रभूमिका ३.श । येप रातमें अनिद्रा
सचेने निरा जाठवहता अथाक् मानसिक विह्वति ।

फस्फरन ३ । दहते बहते मीह वा मूच्छा
भाय बोध हो मानो उमका मरण होगा । घनुटहार
वन् मदप ।

नक्षत्रमस्कृटा ६ । उठा वा अणहाम करना
उमक बादही गभीर होना दांत निकाल कर रुमना
उदरादान रजसाय प्रदर रोगमे प्रदरसाय । निद्रामात्र
न्याटे ।

ग्राटिना ३. । धाम-गरिमा अटसे मनब्याग
कन्ते रजसा प्रदुर रजसाय । दह दया अधिक् इन्द्रिय
परिधानमे अन्वजनित रोगमे अणहाय है ।

सुम्फर ३० । अहिनदह बाद रोगिनी

मुत्रवेग धारणमें प्रसामर्थ्य और
गर्भ्यामें मूत्रत्याग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

पेटमें हानि रहना मूत्रपथके अनेक नादक मज्जा
घसेर धारणमें प्रसामर्थ्य जाना है । मडकोको यह
रोग बड़ा हो कह देता है ।

चिकित्सादि और महकारी उपाय—

मडकोको रातमें सुझानेके पहिले पैसाब कराई सुझाना
उचित है ।

रातके बरत गुरुपाक भोजन करने देना उचित नहीं
है और रातमें फिर पत्र दके जगा कर पैसाब कराना
बध्दा है । रोच शीतल असे नहयानेके सुझाना
जाती है ।

दवा ।

हाल्लर ज्वारमें मिठा है —कमंडर १० कम
दरिम के दोष ३१ माया हिन करनेको हनेम
निषज हो राग दूर हो जाता है ।

रुधे कायदा न होनेके और कुछ ज्वादे अमरवाकी
शक्तिरूपके पदने सिपिया ३० वा ब्रिसाहना
वा पन्सु इदिता है ।

पञ्चम सुषो शीर मव चोत्र उमरुं याम सुन्दर करुं
 धारुं हाना । पञ्चर पगाव हाय पैरको जलन मापुत्र
 चान्ते गरम ।

सन्निप्त चिकित्सा ।

ह्रिटिरिया महित माथेका टरट,—
 इम्बेनिया प्राटोना मियिया ।

गनेक बोच पालेप,—नाइकाप एवा
 कटिहा ।

पाकागयिक विक्रति मद्यण,—इम्बेनिया
 ककुनाम मद्यम ।

कृतु शीर जगयुत्र विक्रति,—ककु इम्
 वि पलम ।

ज्ञाताक्षि बोच पालेप,—इम्बे मद्यम माक
 मय ।

पञ्चम भय,—प्राटोना पलम ।

उत्कृष्टा,—मद्य पलम ।

विशुट,—परम, पलम ।

पतिनियत गेट,—मद्यम ।

पनिट्टा,—इम्बेनिया मद्यम ।

मूत्रवेग धारणमें असामर्थ्य और
शय्यामें मूत्रत्याग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

पेटमें जलमि रहना मूत्रपथक धनेक तराहके मज्ज
घोर कारणमें एसा राग होता है । लडकोंको यह
राग बडा ही कष्ट देता है ।

चिकित्सादि और सहकारी उपाय—

लडकेको रातमें सुतानेके पहिले पैयाब कराके सुनाना
उचित है ।

रातके बह गुरुपाक भोजन करने देना उचित नहीं
है और रातमें फिर एक दफे जगा कर पैयाब कराना
पच्छा है । रोज मीतल जलसे नहलानेसे सुनिद्रा
होती है ।

दवा ।

हात्तर ज्वारने सिषा है —सलकर ३० क्रम
८ दिन के बीच २।३ मात्रा सेवन करनेको देनेसे
निश्चय ही रोग दूर हो जाता है ।

इससे फायदा न होनेसे और कुछ ज्योदे हमरवासी
वात्तिहाधीके पक्षमें सिपिया ३० वा विलाडना
वा पल्स बढ़ियां है ।

अत्यन्त सूक्ष्म धार मव चात्र उमर्कं पाम मूलर कर्कश
बोधं हाना । प्रचर पगाव, हाथ परकी चनन मापका
चादो गरम ।

मक्षिप्र चिकित्सा ।

हृष्टिरिया सहित माथेका टरट,—
इम्नेमिया प्राटोना निपिया ।

गलेक बोच शालेप,—लाइकोप एमा
फिटिडा ।

पाकाशयिक विकृति लक्षण,—इम्नेमिया
ककुनास नक्षत्र ।

षट्तु और लरायुज विकृति,—ककु इम
मि पलम ।

हातौके बोच शालेप,—इम्ने नक्षत्र माकि
सन ।

अत्यन्त भय,—प्राटोना पलम ।

उत्कराठा,—नक्ष, पलम ।

विपट,—धरम्, पलम ।

प्रतिनियत खेट,—नक्षत्र ।

अनिद्रा,—इम्नेमिया, नक्षत्र ।

मूत्रवैध धारणमें पन्नामर्घ्य और

शय्यामें मूत्रत्याग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

एकमें छमि रचना मूत्रपथक पनेक तरफ मस
एनेर हारणमें एका राग जाता है । नडकोका यह
रोग बड़ा ही घट दना है ।

चिह्नित्मादि और सहकारी उपाय—

नडकोका रोगमें सुहातडे एदिमे देसाह करारक सुलाना
वहित है ।

रोगमे वय मूत्रदाह भोजन करने देना उचित नहीं
है और रोगमें फिर एक दजे जल कर देसाह कराना
पच्छा है । रोग रोगमें बहने नडमानेक सुनिदा
हने है ।

दवा ।

हातर आरामे निदा है — दमकर १० कम
एदिन ह दोष २।१ माका हरन करेकी दमन
निदर दो रोग दूर हो जाता है ।

एकडे एदना न होनेके और कुछ नडे नमावकी
एदिनके एदने निदिदा ३० या दिनाडना
वा एदनु वहित है ।

पयस्य सुधो धोर मरु भाजं प्रथमे पापे सुधो ज्वर
 धो । होना । पसर पेगाव भाय परको ज्वर मरुत
 भाटी मरुत ।

मणिप्र चिक्रिया ।

हिष्टिरिया महित मायेका टाट, -

इम मिया प्राटीना मिया ।

गलेक बोच पाघेप, — माइकाप एहा
 किटडा ।

पाकाशयिक विक्रति लक्षण, — इमहि
 ककुनास नक्षत्र ।

श्वेतु धोर सरायुज विक्रति, — ककु इम
 मि पनम ।

कातोके बोच पाघेप, — इमे मरुत माइ
 सन ।

पत्यन्त भय, — प्राटीना पनम ।

उत्कण्ठा, — नक्ष, पनम ।

विपद्, — परम्, पनम ।

प्रतिनियत खेट, — नक्षत्र ।

अनिद्रा, — इमेसिया, नक्षत्र ।

मूत्रवेग धारणमें असामर्थ्य और
शय्यामें मूत्रत्याग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

पेटमें हानि रहना मूत्रयन्त्रके अनेक तरहके मज्ज
बन्दे धारणमें ऐसा काम होता है । मडखोखी यह
रोग बड़ा ही कष्ट देता है ।

चिकित्सादि और सहकारी उपाय—

मडखोखी रातमें सुसानेके पडिले देमाव कराके सुमाना
उचित है ।

रातके बह मूत्रत्याग भोजन करने देना उचित नहीं
है और रातमें निर एक दके जगा कर देमाव कराना
बर्षा है । शीघ्र दूतल अन्नमें महजानेस सुनिद्रा
होती है ।

दवा ।

हात्तर ज्वारमें बिषा है, —सन्धर १० ग्राम
८ दिन के दोष ३१ मासा सेवन करनेको देनेसे
निबट हो रोग दूर हो जाता है ।

रक्तमें फाटदा न होनेस और कुछ ब्यादे समरशानी
बालिशकोके पचने सिपिया ३० वा बैलाडना
वा पल्स बटिला है ।

लाडूकोपडियम ३० । देमाइडे तले डेट
के घुराई तरह धरराऊने धारवार देमाव देमाव
पाडे मो न होय ।

भाकुटियास ६ । पतनी धारसे धयवा वूद
वूद देमाव । देमावने लइ पोव रहना देमाव धारवने
धनमपता ।

क्रिनेटिस् ६ । भूवय्य दद पतनी धारसे
देमाव भूवने देमावत् पदाय रहना । ददुत देर तइ
वेग देनेने धरामी देमाव होनी ।

गून पीडा । (Colic)

कारण । पर्वण कान्शानी चीत्रे धाना धन्यने
बाहु धना ठपडा नगना हनि पादरी निइलना धौर
पाइलनेने दस धना वोट कारणने मो दरद होता
इ उमे गून उइते इ । गून दपसे दरद धनभा जाता
हे । लधारवने इन मोय गूनदीन लडा धरते हे ।

लक्षण । पलादिडे हीव सुरे, वकोट काटन
की तरह सदा गून डेधइत् दारु डेट पुनना लोड
दइ ता धनिधर धनन धौर लक्ष्य विद्यमान रहता
इ । धन दरद धन रहता हे इतो धौरध धानमय

नकिया वा खड़ी वस्तुमें तेनकर धरनेसे उपयम । अल्प
अल्प पतनी दस्त होना ।

हायोस्कोरिया ६ । आधानदुह गूल कनी
निद्रका विपरीत सद्य पर्यात् पेटमें दधानेसे तऊनीक
रटने ।

नक्षत्रभमिका ६ । अनापनित पेटम दरद
मुखसे लन चठना वमन खोठवइता ।

पल्सिटिना ६ । ठण्डानित वा अत्रीयुक्त
वायु वस्तुपरिषि रोगकी उपत्ति । दिनके अयेमें हृदि ।

सलफर ३० । धान पानई बाद पेटमें दरद
आत में हृदि रहना खोठवइता पेटमें नार ।

सुचिप्त विहिता ।

अपाकजनित दरद,—नक्षत्रभमिका पत्र ।

पाथरोजनित दरद,—चायना ।

कृमिजनित दरद,—मिना वा माकु ।

वायुसञ्चारजनित दरद,—सारकोष हाड
में ।

सीसगूल,—इत्यम पत्र ।

तक्रिया वा कड़ो बन्सुस ठेनकर धरनेमे उपयम । यस्य
यस्य पतनी दस्त होना ।

हायोस्कोरिया ६ । पाथानपुत्र गूल कली

सिन्धवा जिपरोत ससष पयात् पेटमे दबानेस तकनीक
दटनी ।

नक्षत्रमिका ६ । यत्री-जनित पेटस दरद

मुषस जन उठना बन्नन खोहदहता ।

पन्मेटिला ६ । ठण्डाननित वा चर्षीयुक्त

पाय वसुपास घोडाको उभ्यति । त्रिनर गयसं हृदि ।

सलफर ३० । पान पानक डाट पेटसं दरद

पात में हनि रहना कोरदहता पेटसं नार ।

सधिस चिकित्सा ।

अपाकजनित दरद,—नक्षत्रमिका पनस ।

पाथरोजनित दरद,—थायना ।

हृमिजनित दरद,—मिना वा माक ।

षादुसञ्चारजनित दरद,—नारकोप, शत्रु
मेरु ।

भीमगुल,—इमस पनस ।

साधारण घाघात ।

गिरने वा मस्तक घाटि हानोमें खोर सठौं मारने से हम उमें घाघात कहा करते हैं । मस्तिष्क प्रमृति स्थानमें लडाटे घट नाग कर सहासा प्राण मय्य हो सकता है ।

विचित्रता ।

इससे साधारण विचित्रता यह है कि स्थान विद्येयने हानधिरा एडनेने वा दाव सुत्नेने मस्तक मुनाबिह विचित्रता काला उदित है । तब मस्तिष्कमें घाघात नग कर वा बाहिरने कुछ दिग् न होकर मारना नाने न खोर मस्तक-घ घबसा उलसद होकर एह स्थान धारिष्ठा है दो तेन घणा एकर ॥१॥ बार सजर कानेडा नेना हुना है । खर कथम — एडोनाइट ६ । मस्तिष्क एनाह वा प्रनाप दिषाद दनेन पैना-डना है इरा नहीं है ।

सप्रहना वा तरफना । (Sprains)

एक-एकाने कु को नेवा ए-इ-ए देर एनेन वा हार मने इनु कडान एनेन पर नाद न एमए हान

